दक्ष®

12 दिसम्बर 2024 को जारी विज्ञप्ति एवं 16 दिसम्बर 2024 को जारी New Changed Syllabus के अनुसार Best Study Material

A Complete Guide for

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित

No.1

REET

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा

2025

हिन्दी

Level-1 (कक्षा 1 से 5)

शिक्षण विधियों सहित

NCERT एवं **Raj. Board** की पुस्तकों पर आधारित

- वर्ष 2022, 2021, 2017, 2015, 2012 व 2011 के **Exam Papers** के प्रश्नों का उत्तर सहित समावेश
- पाठ्यक्रम में शामिल प्रत्येक बिन्दु पर आधारित प्रश्नों का महत्त्व के अनुसार समावेश
- विगत वर्षों के प्रश्नपत्रों में पूछे गये प्रश्नों का अध्यायवार समावेश

—आचार्य संदीप मालाकार—

Daksh Books

Buy Online at :
WWW.DAKSHBOOKS.COM

16 दिसम्बर, 2024 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रम

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (REET)-2024

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

पाठ्यक्रम
(Syllabus)

स्तर-प्रथम • खण्ड का शीर्षक - हिन्दी

भाषा-I

(उस व्यक्ति के लिए जो कक्षा 1 से 5 तक का शिक्षक बनना चाहता है)

(इस प्रश्न–पत्र के इस भाग में 30 अंकों के कुल 30 प्रश्न होंगे)

- एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित व्याकरण संबंधी प्रश्न—
  पर्यायवाची, विलोम, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, शब्दार्थ, शब्द शुद्धि।
  उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय।
- एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रश्न—
  रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना, वचन, काल, लिंग ज्ञात करना। दिए गए शब्दों का वचन, काल और लिंग बदलना।
- वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्य के प्रकार, पदबंध, मुहावरे और लोकोक्तियाँ, विराम चिह्न।
- भाषा की शिक्षण विधि, भाषा शिक्षण के उपागम, भाषा दक्षता का विकास।
- भाषायी कौशलों का विकास (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) हिन्दी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ, शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहु–माध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन।
- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण समग्र एवं सतत् मूल्यांकन, उपचारात्मक शिक्षण।
- राजस्थानी भाषा एवं बोलियों का सामान्य परिचय।

➢ बहु विकल्प प्रश्नों का मापदण्ड कक्षा 1 से 5 तक के राज्य सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम सत्र 2024–25 के आधार पर होगा, लेकिन प्रश्नों चयन एवं कठिनाई स्तर सैकण्डरी (कक्षा 10) तक का होगा।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या
	एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित व्याकरण सम्बन्धी प्रश्न पूछे जायेंगे। 1–28
1	अपठित गद्यांश (पर्यायवाची, विलोम, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, शब्दार्थ, शब्द शुद्धि, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय) 1
2	अपठित गद्यांश (रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना, वचन, काल, लिंग, ज्ञात करना, दिए गए शब्दों का वचन काल और लिंग बदलना) 15
	अपठित गद्यांशों के अन्तर्गत आये हुए व्याकरण संबंधी अध्यायों का परिचय 29–116
1	पर्यायवाची शब्द 29
2	विपरीतार्थक (विलोम) शब्द 38
3	वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द 43
4	शब्द-शुद्धि 49
5	उपसर्ग 55
6	प्रत्यय 61
7	सन्धि व संधि-विच्छेद 67
8	समास एवं समास-विग्रह 77
9	संज्ञा 85
10	सर्वनाम 89
11	विशेषण 92
12	अव्यय 99
13	वचन 104
14	काल 107
15	लिंग 111
	गद्यांशों के अतिरिक्त आये हुए व्याकरण संबंधी अध्यायों का परिचय 117–146
1	वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्य के प्रकार 117
2	पदबन्ध 128
3	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 131
4	विराम चिह्न (प्रकार एवं प्रयोग) 142
	भाषा शिक्षण संबंधी अध्यायों का परिचय 117–256
1	हिन्दी भाषा की शिक्षण विधियाँ 147
2	हिन्दी भाषा शिक्षण के उपागम 170
3	भाषा दक्षता का विकास 175
4	भाषायी कौशल एवं भाषायी कौशलों का विकास (सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना) .. 178
5	हिन्दी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ 193
6	हिन्दी शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री (दृश्य, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य सामग्री) 200
7	पाठ्य पुस्तक, बहु-माध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन 214
8	भाषा शिक्षण में मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण एवं समग्र व सतत् मूल्यांकन 220
9	उपचारात्मक शिक्षण 235
10	राजस्थानी भाषा एवं बोलियों का सामान्य परिचय 241

विज्ञप्ति
2022

REET#Level-I (1-5)

23 जुलाई, 2022 को आयोजित (उत्तर सहित)

हिन्दी - भाषा-I

(उन परीक्षार्थियों के लिये जिन्होंने भाषा-I के विकल्प में हिन्दी विषय चुना है।)

31. किण्डरगार्टन शिक्षण विधि के संबंध में सत्य कथन है—
(A) यह एक अमनोवैज्ञानिक प्रणाली है।
(B) यह उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है।
(C) कुक महोदय ने इस* विधि को निश्चित रूप प्रदान किया।
(D) भाषा के व्याकरण एवं साहित्य की शिक्षा इस विधि से नहीं दी जा सकती।

32. बेसिक शिक्षा प्रणाली में भाषा की शिक्षा निम्नलिखित में से किस माध्यम से दी जा सकती है?
(A) केवल किताबी ज्ञान से। (B) सामाजिक पर्यावरण से।
(C) प्रगति-सूचक लेखाचित्र से। (D) इनमें से कोई नहीं।

33. भाषा शिक्षण के संदर्भ में वैयक्तिक अनुदेशन प्रणाली की क्या सीमा है?
(A) इसमें विद्यार्थी को भाषा के तत्त्वों का ज्ञान प्रभावी रूप से करवाया जा सकता है।
(B) इसमें विद्यार्थी को भाषायी कौशल में दक्ष किया जा सकता है।
(C) इसमें वैयक्तिक शिक्षण पर अधिक बल दिया जाता है।
(D) यह शिक्षण प्रणाली अधिक विद्यार्थियों वाली बड़ी कक्षा में अध्यापन के लिए उपयोगी नहीं है।

34. इनमें से कौन-सा 'परिवीक्षित अध्ययन उपागम' का सोपान नहीं है?
(A) अध्ययन कार्य का आवंटन
(B) अध्ययन हेतु निर्देश
(C) विद्यार्थियों द्वारा स्वाध्याय एवं शिक्षक द्वारा मार्गदर्शन।
(D) कलात्मक प्रायोजना।

35. 'सर्वप्रथम सरल तथा समान आकृति के वर्णों को लिखवाना प्रारंभ कराएँ।' उल्लेखित बात किस स्तर के विद्यार्थियों हेतु कही गयी है?
(A) प्राथमिक स्तर के। (B) उच्च प्राथमिक स्तर के।
(C) माध्यमिक स्तर के। (D) उच्च माध्यमिक स्तर के।

36. भाषा-कौशलों में से अभिव्यक्ति कौशल है—
(A) सुनना और बोलना (B) लिखना और पढ़ना
(C) बोलना और लिखना (D) पढ़ना और बोलना

37. अनुलेख किस भाषा कौशल से संबंधित है?
(A) श्रवण (B) वाचन
(C) लेखन (D) वादन

38. लिंग्वाफोन (रिकॉर्ड प्लेयर) किस प्रकार की अधिगम सामग्री है?
(A) प्रक्षेपक सामग्री (B) दृश्य सामग्री
(C) दृश्य-श्रव्य सामग्री (D) श्रव्य सामग्री

39. भाषा प्रयोगशाला के अनुभाग में सम्मिलित नहीं है—
(A) परामर्श कक्ष (B) श्रवण कक्ष
(C) नियंत्रण कक्ष (D) विश्राम कक्ष

40. सस्वर वाचन का गुण है—
(A) अस्पष्ट उच्चारण (B) क्षिप्रता
(C) उचित ध्वनि निर्गम (D) अस्वाभाविकता

41. मौखिक मूल्यांकन के संबंध में उपयुक्त कथन है—
(A) मौखिक मूल्यांकन में दीर्घउत्तरीय प्रश्न पूछे जाते हैं।
(B) मौखिक मूल्यांकनकर्त्ता निष्ठावान, सहनशील और विषय विशेषज्ञ होना चाहिए।
(C) मौखिक मूल्यांकन में समूहनिष्ठता अधिक होनी चाहिए।
(D) मौखिक मूल्यांकन में विद्यार्थी को आत्माभिव्यक्ति के अवसर कम मिलने चाहिए।

42. ''मूल्यांकन उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा का निर्णय करने की प्रक्रिया है।'' मूल्यांकन की यह परिभाषा किसकी है?
(A) माइकेलिस (B) सी.सी.रॉस
(C) ब्लूम (D) राइटस्टोन

43. विद्यार्थी की सीखने संबंधी कठिनाइयों को दूर करते हुए करवाये जाने वाला शिक्षण कहलाता है—
(A) सूक्ष्म शिक्षण (B) ब्लॉक शिक्षण
(C) अभ्यास शिक्षण (D) उपचारात्मक शिक्षण

44. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का दोष है—
(A) इसमें विद्यार्थियों का निरंतर मूल्यांकन होता रहता है।
(B) विद्यार्थियों को अपनी कमियों का निरंतर ज्ञान होता रहता है।
(C) इसमें अभिभावकों को विद्यार्थी की निरंतर प्रगति की जानकारी होती रहती है।
(D) यह प्रणाली तभी लागू की जा सकती है जब विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात कम हो।

45. उपलब्धि परीक्षण के निर्माण में कितने पदों का प्रयोग किया जाता है?
(A) दो (B) तीन
(C) एक (D) चार

विज्ञप्ति
2017

REET#Level-I (1-5)

11 फरवरी, 2018 को आयोजित (उत्तर सहित)

हिन्दी - भाषा-I

(उन परीक्षार्थियों के लिये जिन्होंने भाषा-I के विकल्प में हिन्दी विषय चुना है।)

31. शिक्षण में इकाई का सम्प्रत्यय किसकी देन है—
(A) ब्लूम (B) जॉन डीवी
(C) मॉरीसन (D) हरबर्ट

32. भाषायी कौशल का लिखित अभिव्यक्त रूप है—
(A) सुनना (B) पढ़ना
(C) उच्चरित (D) लिखना

33. 'ढ' का उच्चारण स्थान है—
(A) कण्ठ (B) तालु
(C) मूर्धा (D) दन्त

34. पाठ्यपुस्तक का अध्ययनात्मक पक्ष है—
(A) पुस्तक का आकार-प्रकार
(B) मुखपृष्ठ
(C) जिल्द
(D) प्राक्कथन

35. वैचारिक सामग्री है—
(A) संरचना (B) मूल विषयवस्तु
(C) शब्दावली (D) व्याकरणिक

36. श्रव्य-दृश्य साधन है—
(A) चलचित्र (B) चित्र
(C) चित्र विस्तारक (D) रेखाचित्र

37. नाटक का सम्बन्ध किस ज्ञानेन्द्रिय से है?
(A) मुँह से (B) कान से
(C) कान व आँख से (D) आँख से

38. सत्र की समाप्ति पर प्रयुक्त मूल्यांकन है—
(A) नियोजनात्मक मूल्यांकन (B) निर्माणात्मक मूल्यांकन
(C) निदानात्मक मूल्यांकन (D) संकलनात्मक मूल्यांकन

39. ब्लू प्रिंट ढाँचा तैयार करने में उपयोगी नहीं है—
(A) शिक्षक निर्मित सामग्री (B) शिक्षण के लक्ष्य
(C) पाठ्यवस्तु के प्रकरण (D) प्रश्नों के प्रकार

40. उपचारात्मक शिक्षण है—
(A) सीखने सम्बन्धी कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त करना।
(B) अध्यापन सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करते हुए शिक्षण किया जाना।
(C) बालकों की वर्तनी सम्बन्धी कठिनाइयों का पता लगाना।
(D) शिक्षक की विषय सम्बन्धी कठिनाइयों का पता लगाना।

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न संख्या 41 से 45 तक के उत्तर दीजिए—

आज हमारे सामने अहं सवाल यह है कि धर्म बड़ा या राष्ट्र? उत्तर में यह निर्विवाद तय होना चाहिए कि राष्ट्र बड़ा है, लेकिन साथ ही आस-पास यह भी देखना है कि राष्ट्र की मौलिक अवधारणाएँ क्या हैं? क्या मिट्टी, पानी, नदी, पहाड़, राजा, प्रजा से ही राष्ट्र की मूर्ति बनती है? नहीं। राष्ट्र की संपूर्ण छवि और पूरा व्यक्तित्व हजारों वर्षों की मानवीय चेतना, जीवन के शाश्वत मूल्यों और अपने धरती-आकाश में अखण्ड विश्वास से बनता है। आदमी की वैज्ञानिक और मौलिक बुलन्दियों के साथ उसके सफ़र में और कुछ भी मुलायम सरीखा साथ रहा है। उसको कतरा-कतरा लेकर भी एक बनने की होशियारी सिखाता रहा है। लम्हा-लम्हा के बीच समय के अरसों को बटोरता रहा है।

41. वह शब्द बताइए जिसमें दो उपसर्गों का प्रयोग हुआ है—
(A) निर्माण (B) निर्विरोध
(C) निरीक्षक (D) निरंकुश

42. इनमें से जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा का सही उदाहरण है—
(A) दानव-दानवता (B) सर्व-सर्वस्व
(C) चतुर-चतुराई (D) गाना-गान

43. 'मौलिक' शब्द किस वाक्यांश के लिए प्रयुक्त होता है?
(A) मूल से मिलाकर बनाया हुआ
(B) मूल, जो किसी की नकल न हो।
(C) मूल में विश्वास करना
(D) मूल की स्थापना

44. इनमें से 'आकाश' का सही पर्याय है—
(A) सर (B) वासव
(C) व्योम (D) उत्पल

45. 'आस-पास' शब्द में कौन सा समास है?
(A) द्वंद्व (B) द्विगु
(C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष

विज्ञप्ति
2012

REET#Level-I (1-5)

(उत्तर सहित)

हिन्दी - भाषा-I

(उन परीक्षार्थियों के लिये जिन्होंने भाषा-I के विकल्प में हिन्दी विषय चुना है।)

निम्न गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों (प्रश्न संख्या 31 से 37) में सबसे उचित विकल्प चुनिए—

कोई भी समाज शून्य में जीवित नहीं रह सकता। उसे अपने लोगों, अपने पशुओं, अपनी जमीन, अपने पेड़-पौधों, अपने कुएँ, अपने तालाबों, अपने खेतों के लिए कोई-न-कोई ऐसी व्यवस्था बनानी पड़ती है जो समयसिद्ध और स्वयंसिद्ध हो। काल के किसी खण्ड विशेष में समाज के सभी सदस्यों के साथ मिल-जुलकर जो व्यवस्था बनती है, उसे फिर सभी सदस्य मिल-जुलकर पाल-पोसकर बड़ा करते हैं और मजबूत बनाते हैं। अपने ऊपर खुद लगाया हुआ यह अनुशासन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपा जाता है।

31. निम्न में तत्सम शब्द है—
(A) जमीन (B) शून्य
(C) खुद (D) मजबूत

32. निम्न में विदेशी शब्द हैं—
(A) पेड़ (B) खण्ड
(C) तालाब (D) खुद

33. 'जमीन' का पर्यायवाची नहीं है—
(A) पृथ्वी (B) धरती
(C) विटप (D) धरणी

34. 'जीवित' का विलोम है—
(A) अजीवंत (B) अस्थिर
(C) अजीवित (D) मृत

35. कौन से शब्द में प्रत्यय नहीं है?
(A) लोगों (B) पशुओं
(C) सदस्यों (D) पीढ़ी

36. 'मिल-जुल' समास का विग्रह है—
(A) मिल से जुल
(B) मिल और जुल
(C) मेल जोल
(D) इनमें से कोई नहीं

37. निम्न में अव्यय है—
(A) समाज (B) खण्ड
(C) एक (D) व्यवस्था

निम्न गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों (प्रश्न संख्या 38 से 44) में सबसे उचित विकल्प चुनिए—

हम लोग जब हिन्दी की 'सेवा' करने की बात सोचते हैं, तो प्रायः भूल जाते हैं कि यह सामाजिक प्रयोग है। हिन्दी की सेवा का अर्थ है उस मानव-समाज की सेवा, जिसके विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम हिन्दी है। मनुष्य ही बड़ी चीज है, भाषा उसी की सेवा के लिए है। साहित्य-सृष्टि का भी यही अर्थ है। जो साहित्य अपने-आप के लिए लिखा जाता है उसकी क्या कीमत है, मैं नहीं कह सकता, परन्तु जो साहित्य मनुष्य-समाज को रोग-शोक, दारिद्र्य, अज्ञान तथा परमुखापेक्षिता से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है, वह निश्चय ही अक्षय-निधि है।

38. 'परमुखापेक्षिता' का अर्थ है—
(A) दूसरों से आशा रखना
(B) पराया मुख अच्छा लगाना
(C) पराये मुख की अपेक्षा करना
(D) ईश्वर का मुख

39. कौन शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?
(A) सेवा (B) भाषा
(C) प्रयोग (D) हिन्दी

40. इस गद्यांश में प्रयुक्त 'अर्थ' शब्द का अर्थ नहीं है—
(A) आशय (B) मतलब
(C) धन (D) अभिप्राय

41. कौन शब्द एकवचन है?
(A) विचारों (B) भाषाओं
(C) अक्षय (D) मनुष्यों

42. 'कीमत' का बहुवचन है—
(A) कीमती (B) कीमतों
(C) किमतों (D) किम्मत

43. 'माध्यम' का बहुवचन है—
(A) मध्यमा (B) माध्यमिक
(C) मध्यम (D) माध्यमों

44. 'अक्षय-निधि' का अर्थ है—
(A) बिना क्षय रोग
(B) किसी का नाम
(C) कभी खत्म न होने वाली संपत्ति
(D) रोग रहित निधि

51. संयुक्त क्रिया का उदाहरण कौनसा वाक्य है?
(A) रस्सी जल गई
(B) सीता पढ़ रही है
(C) तुम प्रतिदिन पढ़ने आया करो
(D) बच्चा सोता है।

52. 'सरल' या 'साधारण' वाक्य किसे कहते हैं?
(A) जो छोटा हो
(B) जिसका अर्थ सरलता से समझ में आ जाए
(C) जिसमें एक कर्त्ता और अनेक क्रियाएँ हों
(D) जिसमें एक उद्देश्य, एक विधेय और एक ही क्रिया हो।

53. 'मोहन बाजार जा रहा है' इस वाक्य में उद्देश्य है
(A) मोहन (B) खरीददारी
(C) घूमना (D) बाज़ार

54. निम्न में से मिश्रित वाक्य है
(A) वर्षा हो रही है
(B) मैं पढ़ता हूँ और वह खेलता है
(C) सुधीर पढ़ता है
(D) मैंने सुना है कि नीना पास हो गई है।

55. किसी के कथन को उद्धृत करते समय किस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है?
(A) विस्मयवाचक चिह्न
(B) अवतरण या उद्धरण चिह्न
(C) प्रश्नवाचक चिह्न
(D) निर्देशक चिह्न

56. सही विराम चिह्नों वाला वाक्य है
(A) जो पत्र आज आया है, कहाँ है?
(B) जो पत्र आज आया है। कहाँ है?
(C) जो पत्र आज आया है, कहाँ है।
(D) जो पत्र, आज आया है, कहाँ है।

57. 'शेर को सामने देख कर .....' यह वाक्य किस मुहावरे से पूर्ण होगा?
(A) मैं सातवें आसमान पर पहुँच गया
(B) मैं आग बबूला हो उठा
(C) मैंने आसमान सिर पर उठा लिया
(D) मेरे प्राण सूख गए।

58. सही मुहावरा है
(A) नेत्रों में मिट्टी डालना
(B) आँखों में रेत फेंकना
(C) आँखों में धूल झोंकना
(D) आँखों में कचरा डालना।

59. 'हाथ न आना' इस मुहावरे का निकटतम अर्थ है
(A) पकड़ में न आना
(B) बहुत बड़ा होना
(C) हाथों का व्यायाम करना
(D) हाथ फैलाना।

60. 'सिर फिर जाना' का अभिप्राय है
(A) चक्कर आ जाना
(B) अहंकारी हो जाना
(C) सर दर्द हो जाना
(D) पीछे मुड़कर देखने लगना

उत्तरमाला

31.(A)	32.(C)	33.(B)	34.(D)	35.(C)	36.(D)	37.(C)	38.(C)	39.(A)	40.(D)
41.(B)	42.(A)	43.(B)	44.(A)	45.(D)	46.(C)	47.(B)	48.(A)	49.(C)	50.(A)
51.(C)	52.(D)	53.(A)	54.(D)	55.(B)	56.(A)	57.(D)	58.(C)	59.(A)	60.(B)

लेवल-1 ● कक्षा 1 से 5 तक ● प्रश्न पत्र-1 ● खण्ड-II ● भाषा-1

एक अपठित गद्यांश में से निम्नलिखित व्याकरण सम्बन्धी प्रश्न पूछे जायेंगे।

1 अपठित गद्यांश

(पर्यायवाची, विलोम, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, शब्दार्थ, शब्द शुद्धि, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय)

अपठित गद्यांश के नियम

- अपठित गद्यांश विद्यार्थी के बोध, ज्ञान एवं कौशल का मापदण्ड होता है। विषयवस्तु व उसके अर्थ को समझकर प्रश्नों का अपेक्षित उत्तर देने के कौशल को इस गद्यांश के माध्यम से परखा जाता है।
- प्रदत्त गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए और जिस विषय पर विशेष बल दिया जाए उस विषय को ध्यान में रखते हुए प्रश्नों के उत्तर लिखने चाहिए।
- अपठित गद्यांश से सम्बन्धित **चार प्रकार** के प्रश्न पूछे जाते हैं—
  1. एक पद में उत्तर देना **2. पूर्ण वाक्य में उत्तर देना**
  3. शीर्षक लिखना **4. भाषिक कार्य**

(1) एक पद में उत्तर देना—इसमें से प्रश्नवाचक शब्दों के माध्यम से प्रश्न पूछे जाते हैं जिनका उत्तर प्रदत्त गद्यांश में से ढूँढकर लिखना होता है।

(2) पूर्ण वाक्य में उत्तर देना—इस प्रश्न का उत्तर ज्यों-का-त्यों लिखने की अपेक्षा पूछे गए प्रश्न को ध्यान में रखकर आवश्यकता के अनुरूप उत्तर देना चाहिए। प्रश्न का उत्तर अपनी शैली में देने का प्रयास करना चाहिए।

(3) शीर्षक लिखना—इस प्रश्न को हल करने के लिए सम्पूर्ण गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें। गद्यांश की विषयवस्तु के अनुसार एक उचित शीर्षक चुनकर लिखें।

- शीर्षक दो या तीन पदों का होना चाहिए। सामान्यतः अनुच्छेद के प्रथम वाक्य या अंतिम वाक्य में उपयुक्त शीर्षक सन्निहित होता है।

(4) भाषिक कार्य—इस प्रश्न के पीछे मुख्य उद्देश्य भाषा की जानकारी एवं बुद्धि-कौशल का परीक्षण करना होता है।

- इसमें **विशेषण-विशेष्य, कर्ता, क्रिया, पर्याय, विलोम** आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। इस प्रश्न के उत्तर विकल्प के रूप में दिए जाते हैं। प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़कर उत्तर (विकल्प) का चयन करना चाहिए।
- **'अपठित'** का अर्थ होता है – पहले न पढ़ा गया। अपठित गद्यांश का स्तर अतीव सुबोध व सरल होता है।
- छात्र उसे पहले अच्छी तरह से पढ़ लें। छात्रों को पढ़ते ही बहुत से प्रश्नों के उत्तर स्वयं ही समझ में आने लगते हैं।

ध्यातव्य महत्वपूर्ण बिन्दु

- गद्यांश को ध्यानपूर्वक दो-तीन बार पढ़ें, ताकि समझ में आ जाए कि उसमें क्या बताया गया है।
- इस बात का ध्यान रखें कि प्रश्न का उत्तर गद्यांश में से ही हो।
- **'भाषिककार्य'** के प्रश्नों के अंतर्गत सही उत्तर चुनने में अपठित गद्यांश की सहायता ली जानी चाहिए।
- शीर्षक का चुनाव विषय वस्तु (गद्यांश से संबद्ध संक्षिप्त व रोचक हो।)
- संबंधित प्रश्नों के उत्तर गद्यांश से लें।
- **'एक पद'** में उत्तर वाले प्रश्नों उत्तर एक शब्द में दें तथा **'पूर्ण वाक्य'** में उत्तर वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्य में दें।
- प्रश्नों के उत्तर सटीक व सारगर्भित होने चाहिए।

REET, लेवल-1, भाषा-I की गत वर्षों की परीक्षाओं में आए हुए अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश - 1

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न संख्या 46 से 50 तक के उत्तर दीजिए— [REET Level-1,-L-I-23-07-2022]

मनुष्य का मन सदैव गतिशील रहता है। ऐसा होता है कि विरोधी शक्तियाँ उसे अपनी ओर खींचती हैं। जो मनुष्य मन की विपरीत परिस्थितियों में अपने को मजबूती से खड़ा नहीं रख सकते और उस धारा के साथ बह जाते हैं, वे कभी उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकेंगे। उनके लिए तो यह कहना चाहिए कि वे जीवित रहते हुए मुर्दे के समान हैं। मन की अवस्था तो सभी को पलटती है। जो व्यक्ति समय एवं परिस्थिति को समझ लेते हैं, वे कभी धोखा नहीं उठा सकते और कठिनाइयों के बीच भी अपना रास्ता निकाल लेते हैं। कारण जानकर वे उसके विषैले और दूषित प्रभाव से भी बचने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन, ऐसे लोगों की

केवल लेवल-1 • कक्षा 1 से 5 तक • प्रश्न पत्र-1 • खण्ड-II • भाषा-1 के छात्रों हेतु

अपठित गद्यांशों के अन्तर्गत आये हुए व्याकरण संबंधी अध्यायों का परिचय

पर्यायवाची, विलोम, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, शब्दार्थ, शब्द शुद्धि, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, वचन, काल, लिंग

1 पर्यायवाची शब्द

- किसी भी भाषा में एक भाव को व्यक्त करने के लिए एक ही शब्द होता है, फिर भी भाव के बहुत ही निकट तक पहुँचने वाले कई शब्द हो सकते हैं। जैसे—
  - ✧ **वृक्ष** कबहु नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।
  - ✧ बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे **पेड़** खजूर।
- इन पंक्तियों में **वृक्ष, पेड़, तरु** और **विटप** शब्द पेड़ के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।
- यद्यपि व्युत्पत्ति और रचना की दृष्टि से इन विभिन्न शब्दों का अलग-अलग महत्त्व है, परन्तु मोटे तौर पर ये शब्द समान अर्थ प्रकट करते हैं। इनके अलावा भी भाषा में अनेक शब्द ऐसे पाये जाते हैं, जो एक ही अर्थ देते हैं।
- ऐसे शब्द जो परस्पर समान अर्थ का बोध कराते हैं, **पर्यायवाची शब्द** कहलाते हैं।

महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्दों के परीक्षोपयोगी उदाहरण

पर्यायशब्द	पर्यायवाची
'अं' एवं 'अ' से बनने वाले पर्यायवाची	
अंधकार	अँधियारा, अँधेरा, तम, तमस्, तिमिर, ध्वांत, तमिस्र।
अंश	अंग, अवयव, उद्धरण, घटक, चित्रांश, टुकड़ा, पक्ष, भाग, भाज्यांश, शरीर, सहायक, सोपान, हिस्सा।
अंगूठी	मुद्रिका, अंगुलिका, मुँदरी, छल्ला
अंधा	सूरदास, अंध, नेत्रहीन, प्रज्ञाचक्षु, चक्षुहीन
अंगीठी	अंगारिणी, अगियारी, तेमनी, अग्निधान, अलाव।
अंगूठा	अंगुष्ठ, करवीर, ठेंगा, वृद्धांगुलि, हूठा, अंगुश्ते।
अकथनीय	अनभिव्यंजनीय, अनिर्वचनीय, अपरिभाष्य, गोपनीय, चमत्कारपूर्ण, वर्णनातीत।
अकल्याण	अमंगल, अनिष्ट, अशुभ, अहित, खराबी, हानि।
अकस्मात	अनायास, संयोग वंश, सहसा, अचानक, हठात, एकदम।
अकाल	भुखमरी, काल, महंगी, तेजी, दुष्कल, दुर्भिक्ष।
अकिंचन	अगतिक, अनुपाय, असहाय, कंगाल, गरीब, गुमनाम, दरिद्र, निर्धन, परावलंबी, साधनहीन।
अक्षत	अनुल्लंघित, अभंजित, अविभक्त, कौमार्यवान।
अगाध	अकूत, अगणनीय, अतुल, अत्यधिक, अनुमानातीत, अमित, असीम, निस्सीम, बेशुमार, भावपूर्ण।
अग्नि	अनल, अरुण, अशनि, आँच, आग, कृशानु, जातवेद, ज्वाला, दहन, धनंजय, पवि
अचिर	अल्पजीवी, क्षणभंगुर, क्षणिक।
अचेत	चेतनाशून्य, चेतनाहीन, बेहोश, मूर्च्छित, संज्ञाहीन।
अच्युत	अटल, अनष्ट, अमर, ईश्वर, कृष्ण, परिवर्तनहीन, विष्णु।
अज्ञानी	मूर्ख, अनभिज्ञ, मूढ़, अनजान
अठखेली	हँसी-मज़ाक, कौतुक, उछल कूद, क्रीडा, चुलबुलापन।

पर्यायशब्द	पर्यायवाची
'आ' से बनने वाले पर्यायवाची	
आँकना	आकलन करना, प्राक्कलन, अनुमान लगाना, निरखना।
आँख	नयन, नेत्र, विलोचन, चक्षु, लोचन, अक्षि, नैन।
आँगन	प्राङ्गण, अजिरा, अँगना।
आँधी	प्रभंजन, तूफान, महावात, अंधड़।
आँसू	अश्रु, नेत्रजल, नयनजल,चक्षुजल।
आईना	आरसी, शीशा, दर्पण।
आकर्षक	मनोहर, मनोज्ञ, मोहक, मंजुल, दिलकश।
आकाश	अंतरिक्ष, अंबर, अनंत, अभ्र, आसमान, खगोल, गगन, फलक, तारापथ, द्यु, नभ, अभ्र, पुष्कर, व्योम, शून्य।
आदर्श	नमूना, शीशा, प्रतिरूप, मानक, दर्पण, आईना।
आदित्य	सूर्य, रवि, भानु, प्रभाकर, दिवाकर, भास्कर।
आनंद	खुशी, प्रमोद, प्रसन्नता, मज़ा, मोद, लुत्फ, सुख, हर्ष।
आपत्ति	विघ्न, दोषारोपण, मुसीबत, आपात, संकट, आपदा, विपत्ति, वज्रपात, क्लेश, विपदा, दुःख, आफत।
आबरू	सम्मान, इज्जत, प्रतिष्ठा।
आभूषण	आभरण, अलंकरण, जेवर, अलंकार, भूषण, गहना।
आम	मादक, आम्र, अतिसौरभ, रसाल, अमृतफल।
आयु	उम्र, जीवनकाल, जिंदगी, वय, वयस, अवस्था।
आयुष्मान	चिरंजीव, चिरायु, दीर्घजीवी, दीर्घायु, शतायु।
आरंभ	शुभारंभ, प्रारंभ, शिलान्यास, उदय, श्री गणेश, समारंभ।
'इ', 'ई' से बनने वाले पर्यायवाची	
इच्छा	अभिलाषा, आकांक्षा, ईहा, कामना, चाह, लालसा, लिप्सा, वांछा, ईप्सा, स्पृहा।
इति	अंत, अशेष, समापन।

2 विपरीतार्थक (विलोम) शब्द

- जो शब्द एक-दूसरे के विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उनको **विलोम शब्द** कहा जाता है।
  जैसे—गुण-अवगुण, धर्म-अधर्म। यहाँ **'गुण'** और **'धर्म'** के विलोम अर्थ देने वाले शब्द क्रमश: **'अवगुण'** व **'अधर्म'** हैं। विलोम शब्द को ही **विपरीतार्थक शब्द** भी कहते हैं।
- भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है।
- विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही **विलोम** (उल्टा) **शब्दों** की जानकारी आवश्यक है।
- हिन्दी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं। जैसे – **दिन-रात, सुख-दु:ख, छोटा-बड़ा** उपसर्ग जोड़कर बनने वाले शब्द –
  जैसे- **ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ** या उपसर्ग बदलकर जैसे-**सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल** बनाए जाते हैं।

उपसर्ग जोड़कर बनने वाले विलोम शब्द

- **कई शब्द उपसर्ग जोड़कर भी बनाए जा सकते हैं** जैसे—आदान-प्रदान, सुलभ-दुर्लभ, आयात-निर्यात, संयाग-वियोग।
- **'अ' उपसर्ग जोड़कर**—सभ्य-असभ्य, न्याय-अन्याय, लौकिक-अलौकिक, हिंसा-अहिंसा, सामान्य-असामान्य।
- **'अप' उपसर्ग जोड़कर**—यश-अपयश, उत्कर्ष-अपकर्ष, मान-अपमान, कीर्ति-अपकीर्ति।
- **'अन्' उपसर्ग जोड़कर**—अंगीकार-अनंगीकार, उत्तरित-अनुत्तरित, अस्तित्व-अनस्तित्व, अभिज्ञ-अनभिज्ञ।
- **'निस्', 'निश्', 'निष्' उपसर्ग जोड़कर**—पाप-निष्पाप, सक्रिय-निष्क्रिय, सशुल्क-नि:शुल्क, सचेष्ट-निश्चेष्ट, तेज-निस्तेज।
- **'निर्' उपसर्ग जोड़कर**—अभिमान-निरभिमान, सापेक्ष-निरपेक्ष, आदर-निरादर, सामिष-निरामिष, सलज्ज-निर्लज्ज।
- **'वि' उपसर्ग जोड़कर**—सम्मुख-विमुख, राग-विराग, देश-विदेश, योजन-वियोजन।
- **'प्रति' उपसर्ग जोड़कर**—आगामी-प्रतिगामी, वादी-प्रतिवादी, घात-प्रतिघात, रूप-प्रतिरूप, आगमन-प्रत्यागमन।
- **'दुर' उपसर्ग जोड़कर**—सुबोध-दुर्बोध, सुव्यवस्थित-दुर्व्यवस्थित, सज्जन-दुर्जन।
- **'दुस्' उपसर्ग जोड़कर**—सत्कर्म-दुष्कर्म, सच्चरित्र-दुश्चरित्र।
- **'कु' उपसर्ग जोड़कर**—सुपात्र-कुपात्र, सुपुत्र-कुपुत्र, सुपाच्य-कुपाच्य, सन्मार्ग-कुमार्ग।
  - ✧ **लिंग परिवर्तन द्वारा**—राजा-रानी, भाई-बहन, वर-कन्या, माता-पिता, नर-नारी, लड़का-लड़की।
  - ✧ **प्रत्ययवत् प्रयुक्त शब्द-परिवर्तन द्वारा**—केन्द्राभिगामी-केंद्रापसारी, गतिवान-गतिहीन।
  - ✧ **नञ् समास द्वारा**—सभ्य-असभ्य, संभव-असंभव, लौकिक-अलौकिक, आदि-अनादि।
  - ✧ **भिन्न शब्द द्वारा**—लाभ-हानि, कटु-मधु, गुरु-लघु, मूक-वाचाल।

'अ' से बनने वाले विलोम शब्दों के उदाहरण

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अचल	सचल	अथ	इति
अनुकूल	प्रतिकूल	अनंत	सान्त
अनर्थ	अर्थ (मंगल)	अचेतन	सचेतन
अनुराग	विराग	अनादि	आदि
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	अग्रज	अनुज
अनुगामी	प्रतिगामी	अलभ्य	लभ्य
अर्वाचीन	प्राचीन	अबला	सबला
अमृत	विष	असीम	ससीम
अस्थिर	स्थिर	अपना	पराया
अपरिचित	परिचित	अणु	परमाणु
अर्थी	प्रत्यर्थी	अध:	उपरि
अन्विति	अनन्विति	अकंटक	कंटकाकीर्ण

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अगाड़ी	पिछाड़ी	अग्रगामी	पश्चगामी
अच्युत	च्युत	अदृश्य	दृश्य
अवलंबित	अनवलंबित	असुविधा	सुविधा
अनिंदनीय	निन्दनीय	अभिलषित	अनभिलषित
अर्हता	अनर्हता	अतुकांत	तुकांत
अधिकांश	अल्पांश	अधिकार	अनधिकार
अभिमुख	पराङ्मुख	अधूरा	पूरा
अनहोनी	होनी	अभिशाप	वरदान
अनाहूत	आहूत	अभ्यंतर	बाह्य
अभ्यस्त	अनभ्यस्त	अनित्य	नित्य
अनुकूल	प्रतिकूल	अमावस्या	पूर्णिमा
अमीर	गरीब	अनुनासिक	निरनुनासिक

4 शब्द-शुद्धि

अशुद्ध शब्दों का शुद्धीकरण और शब्दगत अशुद्धि का कारण

- हिन्दी भाषा एक समृद्ध, परिपूर्ण और वैज्ञानिक भाषा है तथापि व्याकरण की दृष्टि से इसे अपनी मूल भाषा संस्कृत पर आश्रित रहना पड़ता है। संस्कृत व्याकरण का हिन्दी में पर्याप्त प्रयोग होता है और जहाँ व्याकरण के नियमों में थोड़ी भी शिथिलता बरती जाती है वहाँ अशुद्धियाँ शुरू हो जाना स्वाभाविक है।
- भौगोलिक, शैक्षणिक और भाषान्तर सम्पर्क से भाषा में उच्चारण तथा लेखन सम्बन्धी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।
- व्याकरण से सम्बन्धित प्रमुख अशुद्धियाँ **स्वर, व्यंजन, वचन, लिङ्ग, अनुस्वार, विभक्ति** आदि के अनुचित प्रयोग से हो जाती हैं। इन त्रुटियों के कारण भाषा की प्रभावशीलता नष्ट हो जाती है और तब ही भाषा अपनी सम्प्रेषणीयता के महत्त्व को खोने लगती है। फिर वह भाषा साहित्यिक उपयोग के लिए अनुपयुक्त मानी जाती है।
- किसी भी स्थायी साहित्य के लिए शुद्ध भाषा अनिवार्य है। अत: भाषाविदों को सर्वप्रथम भाषा सम्बन्धी दोष दूर करना चाहिए।
- भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों से बचना ज़रूरी है। ऐसे शब्द अथवा पद जिनमें अशुद्धियों की अधिक सम्भावना रहती है।

---

1. दीर्घ वर्ण को लघु वर्ण की तरह उच्चारित करने पर होने वाली अशुद्धि के उदाहरण—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पत्नि	पत्नी	कौशल्या	कौशल्या
श्रीमति	श्रीमती	गोतम	गौतम
अक्षोहिणी	अक्षौहिणी	दिपावली	दीपावली
अनसुया	अनसूया	दिया	दीया

2. अनावश्यक रूप से 'इ' का स्वर जोड़ने पर होने वाली अशुद्धि के उदाहरण—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कवियित्री	कवयित्री	तिरिस्कार	तिरस्कार
छिपकिली	छिपकली	वापिस	वापस
प्रदर्शिनी	प्रदर्शनी	शिखिर	शिखर
सिंहिनी	सिंहनी	परिणित	परिणत

3. 'इ', 'उ' का स्वर आवश्यक होते हुए भी उसे विलोपित करने पर होने वाली अशुद्धि के उदाहरण—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पड़ोसन	पड़ोसिन	साँपन	साँपिन
बंजारन	बंजारिन	सरोजनी	सरोजिनी
युधिष्ठर	युधिष्ठिर	उज्जयनी	उज्जयिनी

4. हिन्दी में कुछ शब्द दोनों रूपों में प्रचलित हैं एवं दोनों ही रूपों में हमेशा शुद्ध रहते हैं।

विशेष नियम के उदाहरण

शुद्ध	शुद्ध	शुद्ध	शुद्ध
मनोरंजन	मनरंजन	मुसकान	मुस्कान
अँगरेजी	अंग्रेजी	आधिक्य	अधिकता
एकत्रित	एकत्र	कुंवर	कुँवर
मध्यान्ह	मध्याह्न	सोसायटी	सोयाइटी

5. ✧ **वर्गोत्तर व्यंजन ('य', 'र','ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह') के लिए केवल अनुस्वार का प्रयोग होता है।**
जैसे—किंवदन्ती, संयम, हंस, संशय, संवाद, संरक्षण।

✧ वर्गोत्तर में अनुस्वार के स्थान पर पंचम वर्ण का प्रयोग करने से शुद्ध अशुद्ध हो जाता है। जैसे—सन्सार (अशुद्ध), हन्स (अशुद्ध)

✧ **निम्न शब्दों में वर्गीय व्यंजन होने पर भी पंचम वर्ण का प्रयोग ही शुद्ध होगा, उनके स्थान पर अनुस्वार स्वीकार्य नहीं है।**
जैसे—अम्मा, उन्नति, गन्ना, वाङ्मय, सम्मुख, सम्मति व धन्वन्तरि (धन्वंतरी)

✧ **संधि करते समय मूर्धन्य ध्वनि पर 'न' वर्ण 'ण' वर्ण में बदल जाता है।**
जैसे—राम+अयन = रामायण (यहाँ 'र' मूर्धन्य ध्वनि है।)
ऋ+न = ऋण (यहाँ 'ऋ' मूर्धन्य ध्वनि है।)

✧ **निम्न शब्दों में 'ण' वर्ण का ही प्रयोग होता है, इसके स्थान पर 'न' लिखने से शब्द अशुद्ध हो जाता है।**
जैसे—शरण, मरण, चरण, रण, हरण, हरिण, भीषण, फण, रमण, भ्रमण, अनुकरण, लक्ष्मण, संचरण, संस्करण, विकिरण, प्रसारण, आभूषण, दर्पण, आकर्षण, विकर्षण, प्रणाम, प्रमाण, कृपाण

6. संधि नियमों की उपेक्षा से होने वाली अशुद्धियाँ।
जैसे— अभि+अर्थी=अभ्यर्थी। परन्तु कुछ लोग इसे अभ्यार्थी उच्चारित करते हैं, जो गलत है।

सही वर्तनी	संधि रूप	अशुद्ध वर्तनी
अहोरात्र	अहन् + रात्रि	अहोरात्रि
अभ्यन्तर	अभि + अन्तर	आभ्यान्तर
प्रातःकाल	प्रातः + काल	प्रातकाल
यशोगान	यशः + गान	यशगान

7. उच्चारण में असावधानी के कारण होने वाली अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अभिष्ट	अभीष्ट	अनाधिकार	अनधिकार
अपरान्ह	अपराह्न	अभ्यांतर	अभ्यन्तर
सदोपदेश	सदुपदेश	दुरावस्था	दुरवस्था
गोरव	गौरव	दिवाली	दीपावली
अग्नी	अग्नि	कवी	कवि
प्रीती	प्रीति	आयू	आयु

6 प्रत्यय

❖ शब्द के अन्त में जुड़ने वाले अक्षर या शब्दांश जिनसे शब्द का अर्थ निश्चित या विशेषता से युक्त हो जाता है, वह **प्रत्यय** कहलाता है। जैसे— दूधिया और सफ़ाई। दूधिया में दूध पर इया (दूध + इया) प्रत्यय और सफ़ाई में सफ़ा में 'ई' (सफ़ा + ई) प्रत्यय लगा हुआ है।

❖ इन प्रत्ययों का स्वतन्त्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता है। इनकी सार्थकता शब्दों के अन्त में जुड़ने से ही होती है।

❖ **प्रत्यय के भेद**—**1.** कृत् प्रत्यय **2.** तद्धित प्रत्यय

कृत् प्रत्यय

❖ धातु के अन्त में जुड़कर उनके अर्थों में परिवर्तन करने वाले प्रत्यय **कृत् प्रत्यय** कहलाते हैं। कृत् प्रत्ययों के योग से बनने वाले शब्द **कृदन्त** कहलाते हैं। **''कृत् प्रत्यय है अन्त में जिनके''** वे कृदन्त कहलाते हैं।

कृत् प्रत्यय के भेद

✧ कर्तृ वाचक कृत् प्रत्यय ✧ कर्म वाचक कृत् प्रत्यय
✧ करण वाचक कृत् प्रत्यय ✧ भाव वाचक कृत् प्रत्यय
✧ क्रिया-वाचक या क्रिया द्योतक कृत् प्रत्यय

1. कर्तृ वाचक कृत् प्रत्यय—जिस प्रत्यय के धातु के अन्त में जुड़ने से शब्द का अर्थ कर्ता या क्रिया का करने वाला व्यक्त होता है, वह **कर्तृ वाचक कृदन्त** (कृत् प्रत्यय) कहलाता है। जैसे—

धातु या मूल शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
'अक' प्रत्यय के उदाहरण		
लिख्	अक	लेखक
पठ्	अक	पाठक
कृ (कार्)	अक	कारक
गै (गाय्)	अक	गायक
घात्	अक	घातक
चाल्	अक	चालक
धाव्	अक	धावक
'आक' प्रत्यय के उदाहरण		
तैर	आक	तैराक
चाल	आक	चालक
'आकू' प्रत्यय के उदाहरण		
लड़	आकू	लड़ाकू
भिड़	आकू	भिड़ाकू
पढ़	आकू	पढ़ाकू
'आका' प्रत्यय के उदाहरण		
धम	आका	धमाका
धड़	आका	धड़ाका
लड़	आका	लड़ाका
'आड़ी' प्रत्यय के उदाहरण		
अन्	आड़ी	अनाड़ी
अग् (आगे)	आड़ी	अगाड़ी
कब्	आड़ी	कबाड़ी
'ऐत' प्रत्यय के उदाहरण		
लठ	ऐत	लठैत
भड़	ऐत	भड़ैत

धातु या मूल शब्द	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
'अक्कड़' प्रत्यय के उदाहरण		
घूम	अक्कड़	घुमक्कड़
बुझ	अक्कड़	बुझक्कड़
भूल	अक्कड़	भुलक्कड़
'एया' प्रत्यय के उदाहरण		
रख	एया	रखैया
खिव	एया	खिवैया
(गै) गव	एया	गवैया
'हार' प्रत्यय के उदाहरण		
राखन	हार	राखनहार
चाखन	हार	चाखनहार

❖ 'वाला' प्रत्यय भी हिन्दी भाषा का कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय ही है और अधिकांश क्रियावाचक पदों पर यह प्रत्यय जुड़ जाता है।
जैसे—पढ़ने वाला, लिखने वाला, दिखने वाला, उठने वाला, दौड़ने वाला, रुकने वाला, हँसने वाला, देने वाला, बोलने वाला आदि।

2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय—जो कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में जुड़कर कर्म का अर्थ प्रकट करते हैं वे प्रत्यय **कर्मवाचक कृत् प्रत्यय** कहलाते हैं।

धातु या मूल शब्द	प्रत्यय	निष्पन्न शब्द
'ना' प्रत्यय के उदाहरण		
(गै) गा	ना	गाना
दा	ना	दाना
पाहु	ना	पाहुना
'औना' प्रत्यय के उदाहरण		
बिछ	औना	बिछौना
खिल (खेल)	औना	खिलौना

8 समास एवं समास-विग्रह

❖ दो पदों के परस्पर मेल को समास कहते हैं अथवा जब दो या दो से अधिक शब्दों के बीच से विभक्ति हटाकर उन्हें मिलाया जाता है तो उसी मेल को समास कहते हैं।
इसमें दो पद होते हैं - पूर्व पद एवं उत्तर पद।

❖ पदों की प्रधानता की दृष्टि से समास के मुख्य भेद—

(1) जिस सामासिक पद का पूर्व पद प्रधान हो—
जैसे—अव्ययीभाव

(2) जिस सामासिक पद का उत्तर पद प्रधान हो—
जैसे—तत्पुरुष, कर्मधारय व द्विगु

(3) जिस सामासिक पद के दोनों पद प्रधान हों—
जैसे—द्वंद्व

(4) जिस सामासिक पद का अन्य पद प्रधान हो—
जैसे—बहुव्रीहि

समास के भेद

✧ अव्ययीभाव समास
✧ तत्पुरुष समास
✧ कर्मधारय समास
✧ द्विगु समास
✧ द्वंद्व समास
✧ बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास

❖ जब पहला पद अव्यय या उपसर्ग हो तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस समास का रूप परिवर्तित नहीं होता, अव्यय की तरह ही होता है। अव्ययीभाव समास निम्न तीन प्रकार से बनता है—

✧ जब प्रथम पद अव्यय हो—जैसे—यथाशक्ति, प्रतिदिन, यथाक्रम, भरपेट, अनुरूप, अकारण, निर्विरोध, प्रतिबिम्ब, सकुशल, सपरिवार, भरसक, अभूतपूर्व, यथा समय आदि।

✧ जब प्रथम पद नाम पद हो—जैसे-विनयपूर्वक, आवश्यकतानुसार, विवेकपूर्वक, विश्वासपूर्वक, कथनानुसार, कुशलतापूर्वक, नित्यप्रति आदि।

✧ जब संज्ञा या अव्यय पद के दोहराने से—जैसे—लातोंलात, बातोंबात, द्वार-द्वार, पल-पल, घड़ी-घड़ी, बार-बार, साफ-साफ, धीरे-धीरे, बीचों-बीच, धड़ाधड़, भागमभाग, एकाएक, पहले पहल, बराबर, मन ही मन, आप ही आप, सरासर आदि।

❖ नियम—(1) अव्यय शब्द 'यथा' से प्रारम्भ होने वाले सामासिक पदों का विग्रह उनके उत्तर पद के बाद 'के अनुसार' लिख कर किया जाता है। जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
यथाविधि	विधि के अनुसार	यथाक्रम	क्रम के अनुसार
यथास्थिति	स्थिति के अनुसार	यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
यथेच्छा	इच्छा के अनुसार	यथायोग्य	योग्यता के अनुसार

❖ नियम—(2) अव्यय शब्द 'यथा' से बने पदों के विग्रह में जैसी है, शब्द लिखकर भी विग्रह किया जाता है। जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
यथा सम्भव	जैसा सम्भव हो	यथोचित	जैसा उचित हो
यथास्थिति	जैसी स्थिति हो	यथागति	जैसी गति हो
यथानुकूल	जैसा अनुकूल हो	यथामति	जैसी मति है

❖ नियम—(3) जिस सामासिक पद में पहला पद 'बे', 'निर्', 'निस्', 'ना', 'नि' आदि हों उनका विग्रह करते समय उनके अन्त में 'रहित' एवं प्रारम्भ में 'बिना' शब्द लिखा जाता है। जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
बेखटके	बिना खटके के	बेचैन	बिना चैन के
बेफायदा	बिना फायदे के	बेधड़क	बिना धड़के के
बेवजह	बिना वजह के	बेदाग	बिना दाग के
बेकार	बिना कार्य के	निर्विरोध	बिना विरोध के

❖ नियम—(4) 'प्रति' उपसर्ग से बने 'समस्त पद' के विग्रह करते समय प्रायः 'उत्तर पद' को दो बार लिख देते हैं अथवा एक शब्द से पहले 'हर' शब्द जोड़ देते हैं। जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
प्रति माह	हर माह	प्रतिदिन	हर दिन
प्रत्यंग	हर अंग	प्रतिशत	हर शत
प्रतिक्षण	हर क्षण	प्रतिवर्ष	हर वर्ष

❖ नियम—(5) 'पूर्व पद' 'आ' उपसर्ग से बना हो तो उसके विग्रह करने पर 'उत्तर पद' के अन्त में 'तक' लिखा जाता है। जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह	समस्त पद	समास विग्रह
आमरण	मरण तक	आजीवन	जीवन तक
आजन्म	जन्म तक	आकण्ठ	कंठ तक

❖ नियम—(6) जब 'प्रति' उपसर्ग से बना समस्त पद मुकाबले के अर्थ में हो तो उसका या 'का' विग्रह करके उत्तर पद को दो बार लिखते हुए उसके मध्य 'के बदले' शब्द लिख कर समास विग्रह किया जाता है। जैसे—

समस्त पद	समास विग्रह
प्रतिघात	घात के बदले घात
प्रतिक्रिया	क्रिया के बदले क्रिया
प्रत्याशा	आशा के बदले आशा
प्रतिकार	कार (कार्य) के बदले कार
प्रत्युत्तर	उत्तर के बदले उत्तर

10 सर्वनाम

परिभाषा

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को **सर्वनाम** कहते हैं। जैसे– मैं, तुम, हम, वे, आप आदि शब्द सर्वनाम हैं।

'सर्वनाम' का शाब्दिक अर्थ है—सबका नाम। ये शब्द किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रयुक्त न होकर सबके द्वारा प्रयुक्त होते हैं तथा किसी एक का नाम न होकर सबका नाम होते हैं। 'मैं' का प्रयोग सभी व्यक्ति अपने लिए करते हैं, अत: 'मैं' किसी एक का नाम न होकर सबका नाम अर्थात् सर्वनाम है।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के छ: भेद बताए गए हैं—

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम
(2) निश्चयवाचक सर्वनाम
(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(4) संबंधवाचक सर्वनाम
(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(6) निजवाचक सर्वनाम

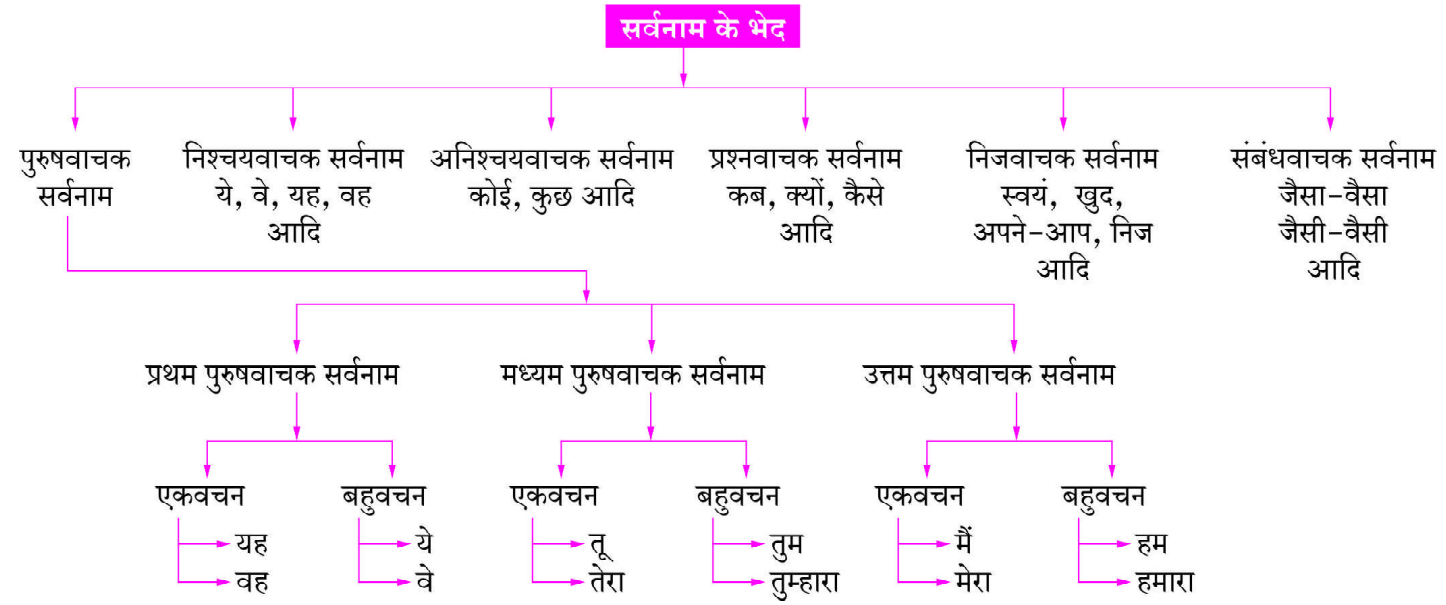

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)—पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष।

उत्तम पुरुष—मैं, हम, मैंने, हमने, मेरा, हमारा, मुझे, मुझको।

मध्यम पुरुष—तू, तुम, तुमने, तुझे, तूने, तुम्हें, तुमको, तुमसे, आपने, आपको।

अन्य पुरुष—वह, यह, वे, ये, इन, उन, उनको, उनसे, इन्हें, उन्हें, इससे, उसको।

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)—निकट या दूर के व्यक्तियों या वस्तुओं का निश्चयात्मक संकेत जिन शब्दों से व्यक्त होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—यह, वह, ये, वे।

1. यह मेरी पुस्तक है।
2. वह उनकी मेज है।
3. ये मेरे हथियार हैं।
4. वे तुम्हारे आदमी हैं।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)—जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वस्तु का बोध नहीं होता उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—कोई, कुछ।

1. कोई आ गया तो क्या करोगे?
2. उसने कुछ नहीं लिया।

(4) संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)—जिस सर्वनाम से किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थापित किया जाए, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—जो, सो।

जो आया है, सो जायेगा, यह ध्रुव सत्य है।

(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)—प्रश्न करने के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहा जाता है। जैसे—कौन, क्या।

1. कौन आया था?
2. वह क्या कह रहा था?
3. दूध में क्या गिर पड़ा?

(6) निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)—निजवाचक सर्वनाम है—आप। यह 'अपने आप' या 'स्वयं' के लिए प्रयुक्त सर्वनाम है।

13 वचन

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या या गिनती का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं। वचन का शाब्दिक अर्थ है—'संख्या वचन'। वचन, संख्या वचन का ही संक्षिप्त रूप है। 'वचन' का अर्थ 'कहना' या 'वादा' भी है।

वचन के प्रकार

हिन्दी में वचन के दो प्रकार होते हैं—(1) एकवचन और (2) बहुवचन।

(1) विकारी शब्द में जिस रूप से एक पदार्थ अथवा व्यक्ति का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे—नदी, लड़का, घोड़ा, बच्चा, कुत्ता, सागर, पर्वत, नगर इत्यादि।

(2) विकारी शब्द के जिस रूप से अधिक पदार्थों अथवा व्यक्तियों का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं—नदियाँ, लड़के, घोड़े, कुत्ते, पर्वतों, सागरों, बच्चे इत्यादि।

वचन के रूपान्तर

वचन के कारण सभी शब्दों—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूप विकृत होते हैं। किन्तु यहाँ ध्यान देने की बात है कि सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूप मूलतः संज्ञाओं पर ही आश्रित हैं। इसीलिए 'वचन' में संज्ञा शब्दों का रूपान्तर होता है।

वचन के अधीन संज्ञा के रूप दो तरह से परिवर्तित होते हैं—(क) विभक्ति रहित (ख) विभक्ति सहित।

विभक्ति रहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम

(1) पुल्लिंग संज्ञा के आकारान्त को एकारान्त कर देने से बहुवचन बनता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चे	बकरा	बकरे
गधा	गधे	मेज	मेजें
घोड़ा	घोड़े	कपड़ा	कपड़े
पहिया	पहिये	बच्चा	बच्चे

अपवाद—किन्तु कुछ ऐसी भी पुल्लिंग संज्ञाएँ हैं, जिनके रूप दोनों वचनों में एक से रहते हैं। ये कुछ शब्द सम्बन्धवाचक, संस्कृत के अकारांत और नकारांत हैं। जैसे—मामा, नाना, बाबा, दादा, पिता (तीनों 'कर्तृ' आदि ऋकारान्त), योद्धा, युवा, आत्मा (युवन्, आत्मन, नकारान्त) देवता, जामाता इत्यादि। उदाहरण—

एकवचन—श्याम हमारे चाचा हैं। बहुवचन—प्रेम और विवेक तुम्हारे मामा हैं।

एकवचन—मैं तुम्हारा नाना हूँ। बहुवचन—श्याम और हरि के नाना आए हैं।

(2) पुल्लिंग आकारान्त के सिवा शेष मात्राओं से अन्त होने वाले शब्दों के रूप दोनों वचनों में एक-से-रहते हैं। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
छात्र पढ़ता है।	छात्र पढ़ते हैं।	पति है।	पति हैं।
शेर आता है।	शेर आते हैं।	कृपालु आया।	कृपालु आए।
साधु आया है।	साधु आए हैं।	उल्लू बैठा है।	उल्लू बैठे हैं।

(3) आकारान्त स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा शब्दों के अन्त में 'एँ' लगाने से बहुवचन बनता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
शाखा	शाखाएँ	भावना	भावनाएँ
कक्षा	कक्षाएँ	वार्ता	वार्ताएँ
लता	लताएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ

(4) अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन संज्ञा के अंतिम 'अ' को 'ऐ' कर देने से तथा अनुस्वार लगाने से बनता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
भैंस	भैंसें	रात	रातें
बात	बातें	सड़क	सड़कें
बहन	बहनें	आदत	आदतें

(5) इकारान्त या ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं में अन्त्य 'ई' को ह्रस्व कर अन्तिम के बाद 'याँ' जोड़ने अर्थात् अन्तिम 'इ' या 'ई' को 'इया' कर देने से बहुवचन बनता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
तिथि	तिथियाँ	नीति	नीतियाँ
रीति	रीतियाँ	नारी	नारियाँ

(6) जिन स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'या' आता है, उनमें 'या' के ऊपर चन्द्र बिन्दु लगाने से बहुवचन बनता है; जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
डिबिया	डिबियाँ	चिड़िया	चिड़ियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ		

(7) अ-आ-इ-ई के अलावा अन्य मात्राओं से अन्त में होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'ए' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है। अन्तिम स्वर 'ऊ' हुआ, तो उसे ह्रस्व कर 'एँ' जोड़ते हैं। जैसे—बहू-बहुएँ, वस्तु-वस्तुएँ।

(8) संज्ञा के पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग रूपों में बहुवचन का बोध प्रायः 'गण', 'वर्ग', 'जन', 'लोग', 'वृन्द' इत्यादि लगाकर कराया जाता है। जैसे—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पाठक	पाठकगण	गुरु	गुरुजन
नारी	नारिवृन्द	अधिकारी	अधिकारी गण
आप	आप लोग	नेता	नेतागण

केवल लेवल-1 • कक्षा 1 से 5 तक • प्रश्न पत्र-1 • खण्ड-II • भाषा-1 के छात्रों हेतु

गद्यांशों के अतिरिक्त आये हुए व्याकरण संबंधी अध्यायों का परिचय

वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्य के प्रकार, पदबंध, मुहावरे और लोकोक्तियाँ, विराम चिह्न

1 वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्य के प्रकार

वाक्य रचना

- वाक्य की रचना मूलतः पदों से होती है। ये पद **संज्ञा, सर्वनाम, विश्लेषण, क्रिया** तथा **अव्यय** होते हैं।
- कभी-कभी पदों से पदबंध की रचना होती है और वाक्य की रचना में ये पदबंध, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण आदि के रूप में आते हैं।
- उपर्युक्त बातें सरल वाक्य की रचना में मिलती हैं जिसमें उद्देश्य और एक विधेय होता है। संयुक्त और मिश्रित वाक्य में दो या अधिक सरल वाक्य इस प्रकार जोड़े जाते हैं कि उनमें एक तो प्रधान उपवाक्य हो जाता है और शेष आश्रित उपवाक्य रहते हैं।
- संयुक्त वाक्य में सरल वाक्य इस प्रकार जोड़े जाते हैं कि कोई भी उपवाक्य आश्रित नहीं होता।

पदक्रम

- 'पदक्रम' का अर्थ है 'वाक्य में पदों के रखे जाने का क्रम'। 'पद' को 'शब्द' कहने के कारण कुछ लोग 'पदक्रम' को 'शब्दक्रम' भी कहते हैं। हर भाषा के वाक्य में पदों या शब्दों के अपने क्रम होते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी में कर्ता + क्रिया + कर्म + (Ram killed Mohan) का क्रम है तो हिन्दी में कर्ता + कर्म + क्रिया (राम ने मोहन को मार डाला)। यहाँ हिन्दी वाक्यों में पदक्रम पर विचार किया जा रहा है।

वाक्य रचना सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण नियम

(1) कर्ता वाक्य में पहले और क्रिया प्रायः अन्त में होती है—**मोहन गया, लड़का दौड़ा**। यों बल देने के लिए क्रम उलट भी सकते हैं। **गया** वह लड़का, **पास** हो चुके तुम।

(2) कर्ता का विस्तार उसके पहले तथा क्रिया का विस्तार कर्ता के बाद आता है—**राम का लड़का मोहन गाड़ी से अपने घर गया।**

(3) कर्म तथा पूरक कर्ता और क्रिया के बीच में आते हैं—राम ने **पुस्तक** ली। यदि दो कर्म हों तो गौण कर्म पहले तथा मुख्य कर्म बाद में आता है—राम ने **मोहन को पत्र लिखा**। कर्म तथा पूरक के विस्तार उनके पूर्व आते हैं—राम ने अपने **मित्र के बेटे** राजीव को **बधाई का** पत्र लिखा, मोहन **अच्छा** डॉक्टर है। बल देने के लिए कर्म पहले भी आ सकता है—पुस्तक ले ली **तुमने** ?

(4) विशेषण प्रायः विशेष्य के पूर्व आते हैं—**तेज** घोड़े को इनाम मिला, **अकर्मण्य** विद्यार्थी फेल हो गया। पूरक विशेषण विशेष्य के बाद आता है— राम **लम्बा** है। यह केवल तब होता है जब क्रिया 'है', 'था', 'होगा' आदि हो। कई विशेषण हों तो संख्यावाचक पहले आता है—मैंने **एक लम्बा काला** आदमी देखा। सामान्यतः विशेषण क्रिया के पहले अवश्य आ जाता है; किन्तु कभी-कभी क्रिया के बाद में अर्थात् वाक्यांत में भी आता है—**चाहे कुछ भी कहो भाई, है वह सुन्दर।**

(5) क्रियाविशेषण प्रायः कर्ता और क्रिया के बीच में आते हैं : बच्चा धीरे-धीरे खा रहा है। कालबोधक क्रियाविशेषण कभी-कभी ज़ोर देने के लिए कर्ता के पहले भी आता है—अब मैं जा रहा हूँ—मैं **अब** जा रहा हूँ।

- स्थानबोधक की भी प्रायः यही स्थिति है—**भारत के उत्तरी भाग में** कश्मीर है—कश्मीर **भारत के उत्तरी भाग में** है। दोनों साथ भी प्रारम्भ में आ सकते हैं—**आज उस हॉल में** कवि-सम्मेलन हो रहा है।
- क्रियाविशेषण कर्ता और कर्म के बीच में तो आता है (मैं **धीरे-धीरे** उसे सिखा रहा हूँ, लड़का **चुपके-चुपके** तैयारी कर रहा है।) अपवादतः क्रियाविशेषण अन्यत्र भी आ सकता है— चलो चलें **अब**; आ गए फिर यहीं ? **शीघ्र ही** मैं आऊँगा—मैं **शीघ्र** ही आऊँगा—मैं आऊँगा **शीघ्र** ही।

(6) सर्वनाम प्रायः संज्ञा के स्थान पर आता है; किन्तु दो बातें ध्यान देने की है—(क) सर्वनाम वाक्य में संबोधन के रूप में नहीं आता,
(ख) विशेषण सर्वनाम के पहले न आकर प्रायः बाद में आता है—वह अच्छा है, तुम मूर्ख हो। यों बोलचाल में बल देने के लिए कभी-कभी विशेषण को सर्वनाम से पहले भी ला देते हैं—**अच्छा** वह है मगर..., **मूर्ख** तुम हो वह नहीं।

- यहाँ दूसरे में बल 'तुम' पर है पर साथ ही 'मूर्ख' पर भी बल है। यों ऐसे प्रयोगों में मूल वाक्य 'वह अच्छा है' 'तुम मूर्ख हो' ही होता है अर्थात् विशेषण पूरक या विधेयक विशेषण ही रहता है।

(7) हिन्दी में क्रिया सामान्यतः अन्त में आती है—मैं **चला**, मैं अब **चला**; किन्तु बल देने के लिए वह आरम्भ में आ सकती है—**चला** मैं; चला अब मैं।

- प्रश्न में तो क्रिया प्रायः आरम्भ में आती है—है भी वह यहाँ? **गया** भी होगा वह ? आज्ञा की क्रिया बल देने के लिए प्रायः आरम्भ में आती है— **जाओ** तुम—तुम जाओ। बैठो वहाँ—वहाँ बैठो, **लिखो** तो ज़रा-ज़रा लिखो तो। 'चाहिए' की भी प्रायः यही स्थिति है— **चाहिए** तो था कि मुझसे मिल लेते; चाहिए तो बहुत कुछ मगर करता कौन है ?

(8) प्रविशेषण तथा क्रियाविशेषण प्रायः विशेषण और क्रियाविशेषण के पहले आते हैं—वह **बहुत** लम्बा है, घोड़ा **काफ़ी** तेज भाग रहा था।

(9) प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा क्रियाविशेषण, वाक्य में प्रारम्भ में (**कौन** आ

2 पदबन्ध

शब्द और पद—'पद' के विषय में पिछले अध्यायों में चर्चा की जा चुकी है कि 'पद' की रचना एक शब्द से होती है। जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो वह पहले 'पद' बनता है।

पदबंध का स्वरूप

पदबंध से तात्पर्य- निम्नलिखित वाक्यों के रंगीन अंशों पर ध्यान दीजिए

1. लड़का घर जाता है।
2. एक छोटा लड़का घर जाता है।
3. छोटा लड़का घर जाता है।
4. मेरा एक छोटा लड़का घर जाता है।

इस दृष्टि से जितने प्रकार के शब्द होते हैं, उतने ही प्रकार के पद हो जाते हैं। संज्ञा शब्द यदि वाक्य में आ जाता है तो वह 'संज्ञा पद' कहलाने लगता है और विशेषण शब्द आ जाता है तो 'विशेषण पद'। 'शब्द' और 'पद' के इस अंतर में दो बातें महत्वपूर्ण होती हैं—

(i) 'पद' बनने से पूर्व शब्द में कोई-न-कोई (रूप साधक) प्रत्यय अवश्य जुड़ता है।

(ii) वाक्य में प्रत्येक 'पद' कोई-न-कोई व्याकरणिक कार्य करने लगता है।

परिभाषा—वाक्य में प्रयोग किए जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं। जब एक से अधिक पद मिलकर व्याकरण पर आधारित इकाई का निर्माण करते हैं तब उस बँधी हुई इकाई को पद-बंध कहते हैं। जैसे—देवकी नन्दन कृष्ण ने गोपियों का मन मोह लिया।

यहाँ देवकी नन्दन कृष्ण कर्ता कारक का कार्य कर रहा है। अतः यह एक पद बंध है।

शीर्ष और आश्रित पद—पद बंध में भी एक पद शीर्ष पद होता है। वह अन्य पदों का केन्द्र होता है। शेष पद उस पर आश्रित होते हैं। जैसे—देवकी नन्दन कृष्ण में कृष्ण शीर्ष पर है। 'देवकी नंदन' कृष्ण पर आश्रित है।

अन्य उदाहरण—सामने एक बहुत सुन्दर बच्चा खेल रहा है। यहाँ 'बच्चा' शीर्ष पद पर है तथा शेष पद उस पर आश्रित है। इसी प्रकार 'एक बहुत सुन्दर' में भी 'सुन्दर' शीर्ष पर है। एक बहुत उस पर आश्रित है।

शीर्ष की पहचान—शीर्ष पद की भूमिका को पहचानने के लिए पदबंध की भूमिका को पहचानना आवश्यक है। यहाँ यह देखना आवश्यक है कि वह संज्ञा का कार्य कर रहा है, या विशेषण, सर्वनाम, क्रिया अथवा क्रिया-विशेषण का कार्य कर रहा है।

अब उस पद-बंध के स्थान पर न्यूनतम एक पद को रखकर देखें। कौनसा पद वाक्य के अर्थ को संगति बनाए हुए है। यही उसका शीर्ष पद है।

पद-बंध के भेद

पदबंधों का नामकरण वस्तुतः पदबंध में आए शीर्ष या केंद्र के स्थान पर आए शब्द (पद) के आधार पर किया जाता है। अर्थात् यदि शीर्ष के स्थान पर संज्ञा शब्द है तो संज्ञा पदबंध, विशेषण है तो विशेषण पदबंध और क्रिया है तो क्रिया पदबंध। इस प्रकार मुख्य रूप से पदबंध पाँच प्रकार के हो सकते हैं—1. संज्ञा पदबंध 2. सर्वनाम पदबंध 3. विशेषण पदबंध 4. क्रियाविशेषण पदबंध 5. क्रिया पदबंध।

1. **संज्ञा पद बंध**—जो पदबंध वाक्य में वही प्रकार्य करते हैं जिसे एक अकेला 'संज्ञा पद' करता है, 'संज्ञा पदबंध' कहलाते हैं। संज्ञा पदबंध का 'शीर्ष' संज्ञा शब्द होता है, शेष घटक उस पर आश्रित रहते हैं। स्वाभाविक रूप से संज्ञा-पद बंध के साथ भी संज्ञा-पद बंध की तरह कारक-चिह्नों का प्रयोग होता है। जैसे- 'हमेशा झूठ बोलने वाले लोग' रचना में 'लोग' है (संज्ञा) तथा 'हमेशा झूठ बोलने वाले' 'लोग' पर आश्रित है। साथ ही पूरी रचना 'हमेशा झूठ बोलने वाले लोग' अकेते संज्ञा पद 'लोग' को स्थानापन्न कर वाक्य में वही प्रकार्य करती है जो अकेला 'लोग' संज्ञा पद कर रहा था। उदाहरणार्थ—
   (i) सामने के मकान में रहने वाला लड़का आज चला गया।
   (ii) स्वागतार्थ आए हुए लोगों से घिर हुए श्रीकृष्ण ने नगर में प्रवेश किया।
   (iii) पास के घर में रहने वाला व्यक्ति मेरा परिचित है।
   (iv) देश के लिए मर मिटने वाला व्यक्ति देशभक्त होता है।
   (v) दशरथ पुत्र राम ने रावण को मार डाला।
   (vi) वह बूढ़ा आदमी शीला का पति है।
   (vii) लोग बेईमान भी होते हैं।
   (vii) झूठ बोलने वाले लोग बेईमान भी होते हैं।
   (viii) हमेशा झूठ बोलने वाले लोग बेईमान भी होते हैं।

संज्ञा पदबन्ध के अन्य उदाहरण—

- ✧ पुत्र के पास होने की खबर सुनकर पिता खुशी से फूला न समाया।
- ✧ यह पत्र मैंने इनाम में मिले पेन से लिखा है।
- ✧ भय से आक्रांत वह छोटा-सा बालक कुछ बोल नहीं पा रहा था।
- ✧ आगरा से आने वाले डॉक्टरों को अशोक होटल में ठहराया गया है।
- ✧ दशरथ पुत्र राम ने रावण को मार गिराया।
- ✧ भारत की राजधानी दिल्ली में इस समय 95 लाख लोग रहते हैं।
- ✧ कभी असत्य न बोलने वाले व्यक्ति देश का गौरव होते हैं।
- ✧ खुशामद करने वाला व्यक्ति क्या नहीं कर सकता।
- ✧ विदेश से आए अतिथियों में कुछ शाकाहारी हैं।
- ✧ परिश्रम करने वाले छात्र उत्तीर्ण हो जाएँगे।
- ✧ बराबर के कमरे में रहने वाला आदमी छत से गिर पड़ा।
- ✧ लोहे की बड़ी अल्मारी से मेरा कोट निकाल लाओ।
- ✧ उस युवक ने ठंड से ठिठुरते वृद्ध को कंबल दिया।
- ✧ हवाई किले बनाने वाले युवकों, असलियत को समझो
- ✧ तुम्हारी किताब लकड़ी की पुरानी तिपाई पर पड़ी है।

2. **सर्वनाम पद बंध**—वाक्य में सर्वनाम पद का कार्य करने वाले पद-बंध 'सर्वनाम' पद बंधन कहलाते हैं।
   (i) शेर की तरह दहाड़ने वाले तुम काँप क्यों रहे हो?
   (ii) बड़ी शेखियाँ बघारने वाला वह आज मुँह की खाए बैठा है।
   (iii) है यहाँ ऐसा कोई ! जो इस शेर को पकड़ ले।
   (iv) तकदीर का मारा मैं कहाँ आ पहुँचा?

4 विराम चिह्न (प्रकार एवं प्रयोग)

विरामचिह्नों के प्रयोग और नियम

❖ **विरामचिह्नों की आवश्यकता**—'विराम' का शाब्दिक अर्थ होता है, ठहराव। जीवन की दौड़ मे मनुष्य को कहीं-न-कहीं रुकना या ठहरना भी पड़ता है। विराम की आवश्यकता हर व्यक्ति को होती है।

❖ जब हम काम करते-करते थक जाते हैं, तब मन आराम करना चाहता है। यह आराम विराम का ही दूसरा नाम है। पहले विराम होता है, फिर आराम। स्पष्ट है कि साधारण जीवन में भी विराम की आवश्यकता है।

❖ लेखन मनुष्य के जीवन की एक विशेष मानसिक अवस्था है। लिखते समय लेखक यों ही नहीं दौड़ता, बल्कि कहीं थोड़ी देर के लिए रुकता है, ठहरता है और पूरा (पूर्ण) विराम लेता है।

❖ ऐसा इसलिए होता है कि हमारी मानसिक दशा की गति उस एक-जैसी नहीं होती। यही कारण है कि लेखनकार्य में भी विरामचिह्नों का प्रयोग करना पड़ता है।

❖ यदि इन चिह्नों का उपयोग न किया जाय, तो भाव अथवा विचार की स्पष्टता में बाधा पड़ेगी और वाक्य एक-दूसरे से उलझ जायेंगे और तब पाठक को व्यर्थ ही माथापच्ची करनी पड़ेगी।

❖ पाठक के भाव-बोध को सरल और सुगम्य बनाने के लिए विरामचिह्नों का प्रयोग होता हैं।

❖ सारांश यह कि वाक्य के सुन्दर गठन और भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता के लिए इन विरामचिह्नों की आवश्यकता और उपयोगिता मानी गयी है।

❖ प्रत्येक विरामचिह्न लेखक की विशेष मनोदशा का एक-एक पड़ाव है, उसके ठहराव का संकेतस्थान है।

❖ भाषा के लिखित रूप में रुकने (ठहरने) अथवा विराम देने के लिए जिन संकेत-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **'विराम चिह्न'** कहते हैं।

❖ बोलते समय भाषा को प्रभावशाली एवं अर्थपूर्ण बनाने के लिए कहीं क्षणभर तो कहीं अधिक देर रुकते हैं अथवा मनोभावों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए किसी शब्द, वाक्यांश या वाक्य पर अधिक बल देते हैं तो किसी पर कम।

❖ इससे भाषा की अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है और उसकी प्रस्तुति अर्थपूर्ण एवं आसानी से ग्रहण करने-योग्य हो जाती है।

❖ मौखिक भाषा के इस उतार-चढ़ाव, गति, विराम (ठहराव), स्पष्टता आदि को लिखित भाषा में विराम-चिह्नों के माध्यम से प्रकट किया जाता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए—

✧ इधर-उधर घूमो मत जाओ। (अस्पष्ट वाक्य)

✧ इधर-उधर घूमो, मत जाओ। (रुकने का संकेत)

✧ इधर-उधर घूमो मत, जाओ। (जाने का संकेत)

❖ उपर्युक्त वाक्यों में एक ही विराम चिह्न के भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रयोग से एक ही वाक्य के अर्थ भिन्न-भिन्न हो गए हैं। अत: भाषा में विराम चिह्नों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है।

विराम चिह्नों के प्रकार

1.	पूर्ण विराम (Full-Stop)	[।]
2.	अल्प विराम (Comma)	[,]
3.	अर्द्ध विराम (Semi Colon)	[;]
4.	उप विराम (Colon)	[:]
5.	प्रश्नवाचक चिह्न (Question Mark)	[?]
6.	विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of Interjection)	[!]
7.	योजक चिह्न (Hyphen)	[-]
8.	निर्देशक चिह्न (Indexical Sign or Dash)	[—]
9.	कोष्ठक चिह्न (Bracket)	[{( )}]
10.	लाघव चिह्न (Abbreviation Sign)	[°]
11.	हंसपद या त्रुटिपरक (Hanspad Sign)	[^]
12.	उद्धरण चिह्न अथवा पुनरुक्ति चिह्न (Quotation Mark)	["...."] ['....']
13.	विवरण चिह्न (Explanation Mark)	[:-]

1. पूर्ण विराम (।)—प्रश्नसूचक वाक्यों को छोड़कर सभी प्रकार के वाक्यों के अंत में इसका प्रयोग किया जाता है।

जैसे—भारतीय संस्कृति का इतिहास बहुत पुराना है।

पूर्ण विराम के उदाहरण—

✧ मुझे मालूम है, आप क्यों आए हैं।

✧ प्रीति मिठाई स्वादिष्ट बनाती है।

✧ राजकमल दूध बेचता है।

✧ संदीप जी हमें हिन्दी पढ़ाते हैं।

✧ हवामहल जयपुर में स्थित है।

2. अल्प विराम (,)—अल्प विराम का प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर किया जाता है—

(i) समान महत्त्व के शब्दों एवं वाक्यों को अलग करने के लिए; जैसे—इस युग में साहित्य, मूर्तिकला, वास्तुकला तथा चित्रकला के क्षेत्र में अद्‌भुत उन्नति हुई।

(ii) जटिल वाक्यों के उपवाक्यों को अलग करने के लिए; जैसे—उसने कहा तो था, किन्तु मैं भूल गया।

(iii) पत्र लिखते समय निम्नलिखित स्थानों पर अलग विराम का प्रयोग किया जाता है—

1 हिन्दी भाषा की शिक्षण विधियाँ

भाषा का स्वरूप

'भाषा' शब्द 'भाष्' धातु के साथ 'टाप्' प्रत्यय का प्रयोग करने से उत्पत्ति को प्राप्त हुआ है। भाष् + टाप् = भाषा अर्थात् वाणी को व्यक्त करना है।

मनुष्य अपने मनोगत भावों व विचारों की अभिव्यक्ति हेतु जिस विशिष्ट साधन विशेष को एक दीर्घावधि से अपने साथ लेकर निरन्तर उन्नति पथ की ओर अग्रसर है, उसी का नाम 'भाषा' है।

'भाषा' मनुष्य के साथ उसी समय से है, जब ईश्वर ने जगत् को बनाया था और मनुष्य, पशु-पक्षी व अन्य प्राणियों को अपने भाव व्यक्त करने हेतु उनके अनुरूप 'भाषा' का सृजन भी किया था।

'भाषा' ही वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता प्रकट कर समाज में अपना ऊँचा दर्जा सुनिश्चित करता है।

मनुष्य के पास भाषा रूपी एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जिससे वह अन्य प्राणियों से अलग होकर अपनी विशिष्टतम भूमिका करता है।

आज विश्व के प्रत्येक देश में मनुष्य के द्वारा किसी न किसी 'भाषा' का प्रयोग किया जाता है।

भाषा ही संपूर्ण विश्व में विचार विनिमय का मूलाधार है। मनुष्य के ऊपर ईश्वर का यह परमोपकार ही है कि उसे 'भाषा' जैसा अमोघास्त्र मिला, जिससे वह विचार विनिमय सम्बन्धी अपने सर्वकार्यों को सम्पन्न करता है।

भाषा रूपी दिव्य ज्योति के कारण ही सारा संसार प्रकाशमान है—

इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत् भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।
—आचार्य दण्डी (काव्यादर्श)

भाषा का मुख्य अर्थ है—''श्रोत्र से उपलभ्य, बुद्धि से स्पष्टतः ग्राह्य व उच्चारण से प्रकाशित ध्वन्यात्मक संकेत।''

डॉ. श्यामसुन्दरदास

मनुष्य और मनुष्य के बीच, वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि-संकेतों का व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।

डॉ. भोलानाथ तिवारी

'भाषा उच्चारणावयवों से उच्चरित अध्ययन विश्लेषणीय यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा एक समाज के लोग आपस में भावों और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।'

कामता प्रसाद गुरु

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भलीभाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्टतया समझ सकता है।

भाषा की प्रकृति एवं स्वरूप

'भाषा' सरिता की तरह निरन्तर प्रवाहमान रहती है, वह विविध क्षेत्रों व कालों को पार करके समय-समय पर अनेक परिवर्तनों को प्राप्त होती है। प्रत्येक भाषा अपनी प्रकृति, आंतरिक गुण-अवगुणों को अपने में समाहित किए रहती है।

'भाषा' एक सामाजिक सामर्थ्य बनकर मनुष्य को अपनी सशक्त अभिव्यक्ति से आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करती है। 'भाषा' जैसी सामर्थ्य को पाकर ही मनुष्य जगत् के अखिल प्राणियों में श्रेष्ठता का प्रतीक माना जाता है।

मानव पूर्वजों द्वारा प्राप्त भाषा ज्ञान को वर्तमान में स्वबुद्धि द्वारा अर्जित कर दक्षता को प्राप्त होता है।

इसी कारण भाषा परम्परागत और अर्जित दोनों रूपों में मनुष्य को प्राप्त होती है। भाषा के मुख्यतः दो रूप हैं—

1. मौखिक रूप (उच्चरित रूप)
2. लिखित रूप

उच्चरित व लिखित भाषा

हम अपने भावों और विचारों को कभी बोलकर तो कभी लिखकर दूसरों तक पहुँचाते हैं।

जब श्रोता सामने होता है तो उससे बोलकर हम अपनी बात कहते हैं; किन्तु जब वह सामने नहीं होता तो हम लिखकर उस तक अपनी बात पहुँचाते हैं। इसी आधार पर **भाषा के दो रूप हो जाते हैं**—

(i) उच्चरित या मौखिक भाषा—'उच्चरित या मौखिक भाषा', भाषा का बोल-चाल रूप है। उच्चरित भाषा का इतिहास मनुष्य के जन्म के साथ ही जुड़ा हुआ है।

- ✧ हर भाषा में अनेक ध्वनियाँ होती हैं। इन्हीं ध्वनियों के परस्पर संयोग से तरह-तरह के शब्द बनते हैं, जो वाक्यों में प्रयुक्त किए जाते हैं।
- ✧ 'उच्चरित भाषा' या 'मौखिक भाषा' वास्तव में भाषा का अस्थायी एवं क्षणिक् रूप होता है। उच्चरित भाषा का प्रयोग प्रायः तभी किया जाता है जब श्रोता वक्ता के सामने होता है।

(ii) लिखित भाषा—उच्चरित भाषा की तुलना में लिखित भाषा-रूप का इतिहास उतना पुराना नहीं है।

- ✧ जब मनुष्य को यह अनुभव हुआ होगा कि वह अपने भावों और विचारों को स्थायित्व प्रदान करे या उन लोगों तक पहुँचाने की कोशिश करे, जो उसके सामने नहीं हैं तो उसने लिखित भाषा-चिह्नों का सहारा लिया होगा।
- ✧ इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर प्रत्येक उच्चरित ध्वनि के लिए तरह-तरह की आकृति वाले लिखित चिह्नों की रचना की गई, जिनको 'लिपि-चिह्न' या 'वर्ण' कहा जाता है।

2 हिन्दी भाषा शिक्षण के उपागम

हिन्दी में शिक्षण विधियों के प्रयोग और विभिन्न उपागमों की जानकारी से भाषा शिक्षक अपने कार्य में सफलता प्राप्त करता है। हिन्दी में शिक्षण उपागम के रूप में परम्परागत व आधुनिक उपागमों की चर्चा की जानी चाहिए।

भाषा शिक्षण के परम्परागत उपागम

भाषा शिक्षण के परम्परागत उपागम में पाठ्यपुस्तक उपागम सर्वाधिक प्रचलित है।

भाषा शिक्षण के आधुनिक उपागम

इसके अन्तर्गत वे सिद्धान्त एवं आधार सम्मिलित किये जाते हैं जिनका अनुसरण करते हुये पाठ्यक्रम का संगठन या आयोजन किया जाता है। इन उपागमों के आधार पर ही शिक्षण विधियों का चयन किया जाता है।

क्र.	उपागम का नाम	प्रमुख विवरण	लाभ/गुण
1.	**इकाई उपागम (Unit approach)**	सीखने की सामग्री को छोटी-छोटी इकाइयों में विभक्त करके सुसंगठित करना।	इससे छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने के विभिन्न अवसर मिलते हैं।
2.	**प्रकरण उपागम (Topical approach)**	इस उपागम में विषयवस्तु प्रकरणों की शृंखला के रूप में संगठित होते हैं। ये प्रकरण कक्षा स्तर, छात्रों की आयु व योग्यता के अनुसार होते हैं।	प्रकरण उपागम में छात्रों की रुचि, योग्यता, आयु और अभिवृत्ति का विशेष ध्यान रखता है।
3.	**कालक्रमिक उपागम (Chronological approach)**	इसमें पूरे पाठ्यक्रम को निश्चित स्तरों या कालों में बाँट दिया जाता है। इसमें विभिन्न घटना व सूचनाओं को क्रमिक वर्णन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।	यह सरल से जटिल एवं ज्ञात से अज्ञात की अवधारणा पर आधारित है।
4.	**सम्मिश्रण उपागम (Fusion approach)**	इसमें निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयासों से सामग्री का चयन किया जाता है।	इसमें कम समय में अधिक ज्ञान देने और समान प्रकृति वाले विषयों को मिलाकर पाठ्यक्रम का संगठन किया जाता है।
5.	**समकेन्द्रित उपागम (Concentric approach)**	इसमें सर्वप्रथम विषयवस्तु की रूपरेखा प्रस्तुत की जाती है। इसके बाद हर साल उसकी विषय वस्तु में वृद्धि की जाती है।	इसमें ज्ञान का आयाम उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है व बालक सरलता से सीखते हैं।
6.	**चक्राकार उपागम (Spiral approach)**	जेरोम ब्रूनर द्वारा प्रतिपादित इस उपागम में पाठ्यक्रम संगठन और विषय स्तर का नियोजन इस प्रकार किया जाता है कि अधिगमकर्ता कठिनाई के उच्च स्तर पर हर समय 2 या 3 श्रेणी स्तरों पर प्रकरण या विषय की पुनरावृत्ति करता है।	इस उपागम में छात्र छोटी कक्षाओं से उच्च कक्षाओं की ओर जटिलताओं के बढ़ते क्रम में सीखता है।
7.	**एकीकृत उपागम/सह सम्बन्ध उपागम (Integrated approach)**	यह विभिन्न विषयों के अन्तर्सम्बन्ध पर आधारित होता है। इसमें विषय का अस्तित्व तो होता है लेकिन उसकी सीमाओं को हटा दिया जाता है। एकीकृत उपागम में इकाई उपागम, समकेन्द्रित उपागम व प्रकरण उपागम की अवधारणा काम में आती है।	एकीकृत उपागम द्वारा पाठ्यक्रम को अधिक व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी बनाया जाता है।

❖ **शिक्षण के लिए अन्य प्रचलित उपागम**

1. पाठ-संसर्ग उपागम 2. रचना-शिक्षण उपागम

1. पाठ-संसर्ग उपागम

❖ **शब्द-शिक्षण**—शब्द-शिक्षण की दृष्टि से पाठ-संसर्ग उपागम का प्रयोग विशेष उपयोगी है क्योंकि पाठ पढ़ाते समय स्वाभाविक रूप से शब्द-शिक्षण के अवसर मिलते जाते हैं।

❖ साहित्य की अन्य विधाओं, जैसे - कविता, कहानी, नाटक, जीवनी आदि के शिक्षण में साहित्यिक सौंदर्य तत्वों के बोध, रसास्वादन, चरित्र-चित्रण तथा कथानक की ओर अधिक ध्यान रहता है और इस कारण भाषा-कार्य के लिए सहज रूप में अवसर नहीं मिलता।

❖ भाषिक कार्यों में भी शब्द-शिक्षण और शब्द-भंडार वृद्धि ही अधिक प्रमुख है।

❖ शब्द-ज्ञान के अंतर्गत पाठ में आये हुए कठिन और अपरिचित शब्दों का केवल अर्थ बता देना ही अभीष्ट नहीं, अपितु उनके आधार पर अधिकाधिक शब्दों का ज्ञान कराना, शब्द-रचना की प्रक्रिया से अवगत कराना, विभिन्न परिस्थितियों में शब्दों का सही प्रयोग आदि भी अपेक्षित है।

4 भाषायी कौशल एवं भाषायी कौशलों का विकास
(सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना)

भाषायी कौशलों का विकास

भाषा कौशल विकास में बालक पहले दूसरों की ध्वनि को ध्यानपूर्वक सुनता है, वह बोलने वाले के मुख की ओर गौर से देखता रहता है, फिर उसी का अनुकरण करता हुआ बोलने का प्रयास करता है।

बार-बार बोलते-बोलते उसे उच्चारण करना आ जाता है फिर ध्वनि लिपि साम्य से वह ध्वनियों को लिपि चिह्नों में पहचानने लगता है, यहाँ से उसका पठन प्रारम्भ होता है।

गतिपूर्वक पठन के बाद लिखने का अभ्यास करता है। इनमें कुशलता अर्जित करने पर बालक भाषा सीख लेता है।

इन चारों कौशलों में कुशलता प्राप्ति के बाद बालक में भाषा संबंधी व्यवहारगत परिवर्तन होने लगता है। वह सुनते हुए अपेक्षित अर्थ ग्रहण कर सकता है, वह अपने विचारों को क्रमबद्ध व्यक्त कर सकता है।

वह लिखित सामग्री को गतिपूर्वक पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

सारांश ग्रहण कर सकता है—लाक्षणिक, व्यंजनात्मक, प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करने की उसमें योग्यता आ जाती है। वह प्रभावी ढंग से शुद्ध व सुन्दर लिखने के योग्य हो जाता है।

भाषा कौशल की विशेषता

- भाषा कौशल को प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण तथा अभ्यास आवश्यक है।
- भाषा कौशल में शब्दों की अन्तः प्रक्रिया होती है।
- भाषा कौशल का उद्देश्य बोधगम्यता है।
- भाषा के कौशल में प्रत्यक्षीकरण तथा मानसिक व्यवस्था की भी आवश्यकता होती है।
- भाषा के कौशल में ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ क्रियाशील होती हैं।
- भाषा कौशल सम्प्रेषण का साधन है।

1. श्रवण कौशल

1. श्रवण कौशल—शैशवावस्था में जब भी शिशु के सामने कोई बोलता है तो वह शिशु उसके मुख की ओर ध्यान (गौर) से देखता है।

एक ही ध्वनि को बार-बार सुनकर वह वक्ता की तरह ही बोलने का प्रयास करता है। धीरे-धीरे उसमें बोलने की शक्ति का विकास होने लगता है। बार-बार बोलने या अभ्यास करने पर बालक वक्ता की तरह शुद्ध बोलने लगता है।

- भाषा से जितना अधिक सम्पर्क होगा बालक की उस भाषा में सुनने की शक्ति का विकास उतना ही अधिक होगा। अतः अध्यापक कक्षा में मानक हिन्दी भाषा का निरन्तर प्रयोग करें। अध्यापक वार्तालाप, चित्र-वर्णन वर्ण व शब्द की आवृत्ति बार-बार करें। बालक के अशुद्ध उच्चारण पर अध्यापक शुद्ध उच्चारण का कई बार अभ्यास कराए।
- मानक हिन्दी के श्रवण अभ्यास हेतु रेडियो, टी.वी., ग्रामोफोन, टेप-रिकॉर्डर आदि की व्यवस्था की जाए।
- अध्यापक आदर्श वाचन, धीरे-धीरे व स्पष्टता से करे, छात्रों को ध्यानपूर्वक सुनने के लिए कहें।
- कविता पाठ स्वयं करे तथा बालगीत याद करने को कहे। कक्षा में बालगीत को छात्र परस्पर सुनाएँ।
- स्वयं कहानी पढ़कर सुनाएँ और छात्र भी कहानी, चुटकुले आदि कक्षा में सुनाएँ।
- अध्यापक ह्रस्व, दीर्घ ध्वनियों का प्रत्यभिज्ञान कराएँ। इस प्रकार के शब्दों का चयन कर स्वयं उच्चारण करें और बालकों को भी वैसा ही बोलने को कहें। जैसे—प्रतिकूल, अनुकूल, लिपि, हिन्दी, शशि, विनीत, बुरा-बुरा, कुल-कूल, तिथि, नीति।

प्रक्रिया—प्रारम्भ में बालक को सुनने का पर्याप्त अवसर देने से बालक के मस्तिष्क में ध्वनि-बिम्ब बनते हैं, वह ध्वनियों का अन्तर समझने के योग्य हो जाता है। इससे वह शुद्ध उच्चारण कर सकता है।

अध्यापक सुनने-समझने के योग्य हो जाता है। इससे वह शुद्ध उच्चारण कर सकता है। अध्यापक सुनने के कौशल-विकास हेतु सबसे पहले मूर्त परिचित वस्तुओं के नाम, उनके आकार, रूप, रंग, कार्य पर छोटे-छोटे सरल शब्दों व वाक्यों में बातचीत करे।

इसके बाद दो, तीन अक्षरों वाले सरल शब्दों का प्रयोग करे जिनमें संयुक्त व्यंजन व चार-पाँच पदों वाले छोटे-छोटे वाक्यों में कहानी, चुटकुले आदि सुनाए और बाद में भाषा की परिमार्जित शब्दावली व वाक्य-रचना का प्रयोग करें।

श्रवण कौशल की परिभाषा

- ''किसी भी व्यक्ति के द्वारा प्रयुक्त ध्वनियाँ, शब्दों या भावों को कानों के द्वारा सुनकर अर्थ-ग्रहण करने की क्रिया 'श्रवण' कहलाती है।
- वक्ता जिस उद्देश्य अथवा अभिप्राय से अपने भावों या विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति कर रहा है, उसे पूरी तरह ध्यानपूर्वक सुनकर, उसके उद्देश्य अथवा अभिप्राय को ग्रहण करने की योग्यता को ही 'श्रवण कौशल' कहते हैं।

पूर्व-प्राथमिक स्तर पर सुनने के कौशल में दक्षता

- पूर्व-प्राथमिक स्तर पर बालकों को मातृभाषा से परिचित कराया जाता है और उनके सुनने और बोलने के कौशलों में दक्षता प्राप्त कराई जाती है।
- इसके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें सुनने के अधिक-से-अधिक अवसर प्रदान कराये जायें। इसके लिए निम्नलिखित उपाय काम में लाये जा सकते हैं—

1. शिशुओं से, उनके परिचित विषयों पर बातचीत की जाये।
2. उनके स्तर के अनुसार छोटी-छोटी और रोचक कहानियाँ सुनायी जायें।

5 हिन्दी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ

❖ **हिन्दी शिक्षण में प्रमुख चुनौतियाँ**—हिन्दी शिक्षण में बालकों को पढ़ाते समय कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जैसे—वचन सम्बन्धी, ध्वनि सम्बन्धी, लेखन सम्बन्धी आदि। इनके कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न किया जाता है जिससे बालक उनको दूर करके भाषा शिक्षण में आने वाली कठिनाइयों को दूर कर सकें व भाषा का उचित ज्ञान प्राप्त कर सकें।

❖ बालक को व्याकरण सम्बन्धी भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जिसे छात्र व शिक्षक मिलकर दूर कर सकते हैं। कुछ मुख्य चुनौतियाँ निम्न हैं।

❖ ऐसे अनेक बालक हैं जिन्हें बात करना देर से सीख पाते हैं या बात करने में पिछड़े होते हैं। कुछ छात्रों को वाचन, वर्तनी, लेखन या गणित की समस्याओं में गणना करना सीखने में अत्यधिक कठिनाई होती है।

❖ सभी बालकों का सीखने में पिछड़ापन केवल सीखने की अयोग्यता के कारण ही नहीं होता है अपितु यह अन्य कारणों से भी हो सकता है यथा अंधे और बहरे बालक विचारों के आदान-प्रदान में पिछड़े होते हैं।

❖ यह पिछड़ापन अंधे और बहरेपन के कारण होता है न कि सीखने की अयोग्यता के कारण।

❖ इसी तरह वाचन या अन्य विद्यालय विषयों में पिछड़ापन सीखने के अवसरों की कमी या खराब शिक्षण के कारण भी हो सकता है।

❖ **अधिगम अयोग्यता से आशय वाणी, भाषा, वाचन, वर्तनी, लेखन या गणित की एक या अधिक प्रक्रियाओं में पिछड़ापन, व्यतिक्रम या विलम्बित विकास से है।**

❖ यह मस्तिष्क के कार्य न करने या सांवेगिक या व्यवहारात्मक बाधा का परिणाम है न कि मानसिक पिछड़ेपन, ज्ञानेन्द्रियों की कमी या सांस्कृतिक और शिक्षण सम्बन्धी कारकों का।

अधिगम की प्रमुख अयोग्यताएँ

1.	डिस्लेक्सिया	पठन/वाचन अयोग्यता
2.	डिस्ग्राफिया	लेखन विकार
3.	डिस्आर्थोग्राफिया	वर्तनी विकार
4.	डिस्प्रेक्सिया	लेखन सम्बन्धी व्यतिक्रम
5.	एफासिया	वाचन, लेखन, भाषा में अयोग्यता
6.	सेन्सरी एफासिया	समझने की शक्ति की हानि
7.	मोटर एफासिया	बोलने/विचार-विमर्श की हानि
8.	अलेक्सिया	वाचन योग्यता की हानि (शब्द दृष्टिहीनता)
9.	एकाल कूलिया	गणितीय योग्यता की कमी
10.	एग्राफिया	लेखन की अयोग्यता
11.	डिस्कालकूलिया	गणितीय विकार

❖ शिक्षा में एक बालक वाचन सीखने की बौद्धिक क्षमता रखता है। लेकिन पर्याप्त शिक्षण के बाद भी सीख नहीं पाता है तो इसे **'वाचन अयोग्यता'** में वर्गीकृत किया जाता है।

❖ ऐसे ही वर्गीकरण वर्तनी अयोग्यता, लेखन अयोग्यता तथा गणित अयोग्यता के रूप में किये जाते हैं। चिकित्सा साहित्य के लिए भिन्न शब्दावली उपयोग की जाती है।

अधिगम की अयोग्यताओं के प्रमुख प्रकार निम्न प्रकार हैं—

1. वाचाघात (Aphasia)

❖ एफासिया का प्रयोग विस्तृत अर्थ में सिरेब्रेल अकार्यता से उत्पन्न **वाचन, लेखन, बोलने तथा बोले या लिखित शब्दों का अर्थ निकालने में अयोग्यता** के लिए होता है।

❖ **वाचाघात** (Aphasia) मस्तिष्क की ऐसी विकृति है जिसमें व्यक्ति के बोलने, लिखने तथा बोले एवं लिखित शब्दों को समझाने या प्रकट करने में अनियमितता, अस्पष्टता आदि स्थायी विकार उत्पन्न हो जाता है।

वाचाघात के कारण

❖ वाचाघात के मुख्य कारण मस्तिष्क का **आम्बोसिस, रक्त स्रोत शोधन** (Embolism), **अर्बुद (Tumour), फोड़े (Abscess)** इत्यादि माने जाते हैं, जो यदि मस्तिष्क के दाहिने भाग में हो तो शरीर का बायां भाग और यदि मस्तिष्क के बाएं भाग में हो, तो शरीर का दाहिना भाग आक्रांत होता है।

❖ सिल्वियन धमनी का आम्बोसिस रक्त स्रोत रोधन रोगोत्पत्ति में अधिक सहायक होता है। अर्बुदजन्य वाचाघात एकाएक उत्पन्न होता है। धीरे-धीरे **वाचाघात की उत्पत्ति मिर्गी, रक्तमूल विषाक्तता, उन्मादी** का व्यापक पक्षाघात को उपदंश की चतुर्थ अवस्था में गंभीर स्वरूप होता है तथा मस्तिष्क शोध, तंद्रा इत्यादि कारणों से होती है।

वाचाघात के प्रकार

लक्षणों के आधार पर वाचाघात का वर्गीकरण निम्न प्रकार है—

(A) गामक एफेसिया (Motor Aphasia)—गामक एफासिया से तात्पर्य **बोलने या दूसरे के साथ विचार-विमर्श की योग्यता की क्षति** से है। **प्रेरक वाचाघात** (Aphasia Motor) में रोगी केवल स्पष्ट रूप से बोल नहीं सकता।

❖ परन्तु इसमें बोलते समय प्रयुक्त होने वाली मांसपेशियों में किसी प्रकार का विकार नहीं होता। इस अवस्था में रोगी केवल छोटे-छोटे शब्दों का ही सही उच्चारण कर सकता है।

(B) ज्ञानात्मक एफासिया (Sensory Aphasia)—ज्ञानात्मक एफासिया बोले गये **शब्दों, संकेतों या छपी हुई सामग्री को समझने की शक्ति की क्षति है।**

❖ ट्रांसस्कोर्टिकल सेन्सरी एफासिया (TSA) वाचाघात (एफासिया) का एक प्रकार है जो मस्तिष्क के टेम्पोरल लोबस के विशिष्ट क्षेत्र की हानि

7 पाठ्य पुस्तक, बहु-माध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन

पाठ्य पुस्तक

प्राचीन भारत में पाठ्य-पुस्तक के लिए ग्रन्थ शब्द का प्रचलन था। ग्रन्थ का अर्थ है-गूँथना, बाँधना, नियमित ढंग से जोड़ना, क्रम से रखना आदि। भोज-पत्र या ताड़पत्र को आचार्य लोग अपने शिष्यों के समक्ष क्रम से रखते थे। उनमें बीच में छेद करके किसी धागे से गूँथ भी देते थे। इसीलिए उन्हें ग्रन्थ कहा जाता था।

अंग्रेजी का 'बुक' शब्द जर्मन भाषा के 'बीक'(beach) शब्द से व्युत्पन्न माना जाता है, जिसका अर्थ है-वृक्ष। फ्रांसीसी भाषा में भी इसका सम्बन्ध वृक्ष की छाल या तख्ती पर लिखने से है।

आज पाठ्य-पुस्तक की संज्ञा प्रत्येक पुस्तक को नहीं दी जा सकती। गुड के अनुसार, 'एक निश्चित पाठ्यक्रम के अध्ययन के प्रमुख साधन के रूप में एक निश्चित शैक्षिक स्तर पर प्रयुक्त करने के लिए निश्चित विषय पर व्यवस्थित ढंग से लिखी हुई पुस्तक पाठ्य-पुस्तक है।''

क्रोनबैक ने ठीक ही कहा है कि 'पुस्तक प्रायः अप्रौढ़ छात्र के लिए लिखी जाती है।'

पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता के सम्बन्ध में कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. पाठ्य-पुस्तकों में अनेक प्रकार की सूचनाएँ एक ही स्थान पर मिल जाती हैं अतः सूचनाओं के संग्रह के लिए इनकी आवश्यकता है।
2. इनके प्रयोग से पाठ को पढ़ने और पढ़ाने में सहायता मिलती है।
3. पठित पाठ को पुनःस्मरण करने-कराने में ये सबल साधन हैं।
4. इनसे ज्ञानोपार्जन में सहायता प्राप्त होती है।
5. अध्यापक अपनी सुविधानुसार बालकों की योग्यता का ध्यान रखते हुए शिक्षा दे सकें, इसके लिए पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता है।
6. छात्रों को गृह-कार्य देने में इनसे सुविधा होती है।
7. उत्तम पाठ्य-पुस्तकों से पाठ्यक्रम-निर्धारण में भी सहायता मिलती है।
8. यह वह साधन है जो भाषा-शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक बनता है।
9. पाठ्य-पुस्तकों से छात्रों के हृदय में पढ़ने की प्रेरणा जागृत की जाती है।
10. भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए पाठ्य-पुस्तकों का होना अति आवश्यक है। इनकी आवश्यकता अध्यापक और छात्र, दोनों को है।
11. सम्पूर्ण कक्षा को एक साथ पढ़ाने में पाठ्य-पुस्तकें बड़ी उपयोगी होती हैं। इनकी सहायता से एक अध्यापक अनेक छात्रों को एक साथ सरलता से पढ़ा सकता है। इससे समय और शक्ति का अपव्यय नहीं होता है।
12. पाठ्य-पुस्तकें साधन हैं, साध्य नहीं।

पाठ्य-पुस्तकों के गुण

एक अच्छी पाठ्य-पुस्तकों की कुछ विशेषताएँ होती हैं, वे ही विशेषताएँ उसके गुण का निर्धारण करती हैं। पाठ्य-पुस्तकों के गुण को हम मुख्य रूप से दो दृष्टियों से देख सकते हैं। इन्हें पुस्तकों के दो रूप भी कहा जाता है। ये हैं

(1) आभ्यन्तरिक (2) बाह्य।

आभ्यन्तरिक गुण पुस्तक के वे भीतरी गुण हैं जो उसकी भाषा, शैली, पाठ्य-विषय आदि की दृष्टि से होते हैं। बाह्य गुणों में पुस्तक का आवरण, मुद्रण, साज-सज्जा आदि आते हैं।

(1) सोद्देश्यता—प्रत्येक पाठ्य-पुस्तक की रचना कुछ उद्देश्यों को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए। पुस्तक में इन उद्देश्य-भूगोल और विज्ञान का ज्ञान देना नहीं होता। अतः ऐसे विषयों पर आधारित पाठों का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना न होकर भाषा-ज्ञान बढ़ाना है। अतः पाठों को भाषा-ज्ञान वृद्धि का उद्देश्य पूरा करना चाहिए।

(2) उपयुक्तता— मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मानव-व्यक्तित्व के विकास की कई अवस्थाएँ हैं, जैसे-बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था आदि। इन अवस्थाओं की सामान्य प्रवृत्तियों के अनुकूल विषयों पर आधारित पाठ उपयुक्त होते हैं।

(3) विषय-विविधता—एक ही प्रकार के विषय पर आधारित अनेक पाठों की अपेक्षा अनेक विषयों पर आधारित पाठ अच्छे होते हैं। इस प्रकार साहित्य की विभिन्न विधाओं का पुस्तक में प्रतिनिधित्व होना चाहिए। गद्य, पद्य, नाटक, कहानी, निबन्ध आदि सभी विषयों पर पाठ होने चाहिए।

(4) रोचकता—जिन विषयों में छात्रों की रुचि होती है उनके अध्ययन में वे ऊबते नहीं और उन्हें शीघ्र समझ लेते हैं। रुचि का सिद्धान्त आज का एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है और इस सिद्धान्त को शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में व्यवहृत किया जाना चाहिए।

(5) जीवन से सम्बद्धता—पाठ्य-पुस्तक में आए हुए विषय जीवन से सम्बन्धित होने चाहिए। जीवन से असम्बद्ध विषयों को सीखने में छात्रों को कठिनाई होती है।

(6) क्रमबद्धता—पाठ्य-पुस्तकों के पाठ क्रमबद्ध होने चाहिए। यह क्रम छात्रों की आयु के अनुसार होना चाहिए तथा विषयों को 'सरल से कठिन की ओर' के सिद्धान्त के आधार पर व्यवस्थित करना चाहिए।

(7) आदर्शवादिता—पाठ्य-पुस्तक में कुछ पाठ ऐसे हों जो विद्यार्थी को नया सन्देश, नयी प्रेरणा एवं नये आदर्श प्रदान करने में सक्षम हों।

(8) व्यावहारिक—कुछ पाठ ऐसे भी होने चाहिए जो बालक की व्यावहारिक बुद्धि को विकसित कर सकें और उसे लोकाचार की शिक्षा दे सकें।

(9) स्तरानुकूलता—पाठ्य-पुस्तकों की भाषा छात्रों के अनुकूल होनी चाहिए। प्रारम्भिक कक्षाओं में इनकी भाषा बहुत सरल हो और शनैःशनैः व्यवस्थानुसार भाषा के स्तर को बढ़ाया जाय।

(10) शुद्धता—भाषा की दृष्टि से पाठ्य-पुस्तकों को शुद्ध होना चाहिए। यदि पुस्तक की ही भाषा अशुद्ध है तो यह आशा कैसे की जा सकती

8 भाषा शिक्षण में मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण का निर्माण एवं समग्र व सतत् मूल्यांकन

मूल्यांकन

❖ **मूल्यांकन का अर्थ है**—निर्णय देना। बच्चे के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक शक्तियों से सम्बन्धित विकास की निरन्तर जाँच पड़ताल। मूल्यांकन एक सकारात्मक प्रक्रिया है।

- ✧ इंग्लैण्ड में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में सन् 1902 में पहली बार लिखित परीक्षा का प्रयोग हुआ।
- ✧ भारत में सन् 1957 में परीक्षा पद्धति में सुधार हेतु शिकागो विश्वविद्यालय के बेन्जामिन ब्लूम को नियुक्त किया गया जिन्होंने व्यापक अध्ययन के बाद परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण सूचना तैयार की। इन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक विश्वविद्यालय में परीक्षाफलों के लिए एक मनोविज्ञान का विशेषज्ञ नियुक्त होना चाहिए।
- ✧ इन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा विभाग स्थापित करने तथा परीक्षा में वस्तुनिष्ठता स्थापित करने पर बल दिया।
- ✧ भारत में ब्लूम के प्रस्तावों को स्वीकार करते हुए सन् 1958 में राष्ट्रीय मूल्यांकन विभाग की स्थापना की गई। जिसे सन् 1961 में स्थापित एनसीईआरटी में विलय कर दिया गया।
- ✧ भारत में विद्यालयों का निरीक्षण, मूल्यांकन तथा कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया और दस वर्षीय योजना बनायी जिसके पक्ष निम्न हैं—
  (1) अधिगम उद्देश्य निर्धारित करना।
  (2) संदर्भ व्यक्तियों को प्रशिक्षण देना।
  (3) आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन पद्धतियों का विकास करना।
- ✧ परीक्षा, मापन एवं मूल्यांकन के मध्य सम्बन्ध–ग्रानलुंड ने बताया जो निम्न है—
  मूल्यांकन = मापन + मूल्य निर्णय, या मूल्यांकन = परीक्षा + मापन

मूल्यांकन की विशेषताएँ

❖ मूल्यांकन केवल साधन मात्र है। साधन का निर्दोष होना सफलता के लिए आवश्यक है।

❖ अच्छे मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है।

1. व्यापकता (Prevalence)

❖ व्यापकता से तात्पर्य है **पाठ्यक्रम में सम्मिलित तथ्यों में से अधिक से अधिक का समावेश करना।** अर्थात् परीक्षा में दिए प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से सम्बन्धित हो।

❖ व्यापकता का सम्बन्ध जहाँ सामग्री से है, वहीं दूसरी ओर उद्देश्यों से भी है।

❖ जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है, उनका व्यापकता या समावेश करना भी अच्छे मूल्यांकन का आवश्यक गुण है।

❖ एक अच्छी परीक्षा द्वारा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों में से अधिक से अधिक का परीक्षण होना चाहिए।

2. वस्तुनिष्ठता (Objectivity)

❖ जिस परीक्षण का **मूल्यांकन विभिन्न परीक्षकों द्वारा किए जाने पर भी परीक्षा–परिणाम में अन्तर नहीं** आए तो वह वस्तुनिष्ठता का उत्तम उदाहरण होगा।

❖ अतः कोई भी परीक्षा वस्तुनिष्ठ तब कही जाएगी जबकि प्रश्नों के विभिन्न उत्तर नहीं बल्कि उत्तर केवल एक ही होगा।

❖ इसमें परीक्षक की रुचि, मनोदशा तथा पक्षपात का कोई स्थान नहीं होता है।

3. विश्वसनीयता (Reliability)

❖ किसी विद्यार्थी के **विभिन्न अवसरों पर या उसी प्रकार के दूसरे परीक्षण में भी लगभग समान अंक आए,** तो उसमें विश्वसनीयता का गुण होगा।

❖ इस प्रकार इसका सम्बन्ध मापन की यथार्थता से है।

❖ यद्यपि परिपक्वता तथा अभ्यास आदि तत्त्वों के कारण प्राप्तांकों में अन्तर पड़ सकता है, उस पर यह असंगति या अंकों की असमानता नगण्य ही मानी जाएगी।

4. विभेदकारिता (Differention)

❖ मूल्यांकन के विभेदकारी होने का अर्थ यह है कि **जब उसमें सभी प्रकार के स्तरों के छात्रों के अनुकूल प्रश्न हों।**

❖ प्रखर बुद्धि तथा मंद बुद्धि वाले सभी छात्रों के लिए परीक्षा में समावेश हो।

❖ सभी प्रकार के स्तरों के प्रतिभावान, सामान्य, कमजोर आदि के बीच स्पष्ट भेद करने वाली परीक्षा होनी चाहिए।

5. वैधता (Validity)

❖ किसी भी परीक्षा या मूल्यांकन की वैधता का अर्थ है कि **वह कितनी शुद्धता तथा सार्थकता से किसी विद्यार्थी की योग्यता का मापन करती है।**

❖ जब मूल्यांकन द्वारा अभीष्ट लक्ष्य का ही मापन होता है, तब उसे वैध कहा जाता है।

❖ उसे उसी तथ्य का मापन करना चाहिए जिसके लिए उसका प्रयोग किया गया है।

6. व्यावहारिकता एवं उपयोगिता (Practicability and Utility)

❖ वही परीक्षा उपयोगी कही जाएगी, जिसमें ऐसे प्रश्नों का समावेश हो, जिन्हें छात्र समझ सकें और उत्तर दे सकें।

❖ अध्यापकों को भी इस प्रकार की परीक्षा में अंक देने में कठिनाई नहीं होगी और **वांछित उद्देश्य की प्राप्ति** भी हो जाएगी।

मूल्यांकन के उद्देश्य

❖ मूल्यांकन के उद्देश्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है—
(A) शिक्षण उद्देश्य—छात्रों का वर्गीकरण, विद्यार्थियों की समग्र प्रगति

9 उपचारात्मक शिक्षण

उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ, स्वरूप, प्रकार

उपचारात्मक शिक्षण वह शिक्षण है, जिसको **नैदानिक परीक्षण द्वारा ज्ञात कमी को दूर करने के लिए अपनाया जाता है।** जिस प्रकार रोग के निदान के लिए जब उसमें अनुकूल इलाज किया जाता है, तो उसका उपचार होता है।

उसी प्रकार भाषा शिक्षण में छात्र की ग्राह्यता की **कमजोरी का पता लगाकर** उसको **दूर करने के लिए** जिस प्रकार का **शिक्षण किया जाता** है, वह उपचारी शिक्षण या **उपचारात्मक शिक्षण** कहलाता है।

उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य उन कमियों को दूर करना, जो छात्रों के शैक्षणिक विकास में बाधक हैं।

(1) सामूहिक—यदि कक्षा के अधिकांश छात्र एक विशेष प्रकरण में कमजोर हों तो कक्षागत सामूहिक शिक्षण किया जाता है।

(2) वैयक्तिक—किसी विशेष प्रकरण में केवल दो-तीन छात्र कमजोर हों तो व्यक्तिगत शिक्षण, निर्देशन और विशेष अभ्यास कार्य देकर उपचारात्मक शिक्षण कराया जाता है।

उपचारात्मक शिक्षण में बालक को प्रकरण विशेष का अभ्यास कार्य पर्याप्त मात्रा में दिया जाता है। बालक पर वैयक्तिक रूप से अलग से ध्यान देकर उसे कोष, संदर्भ ग्रंथ आदि की सहायता लेने हेतु कहा जाता है।

उपचारात्मक शिक्षण की सामान्य शिक्षण से भिन्नता—इसकी विधि वाचन, वर्तनी, सुलेख, रचना आदि प्रत्येक क्षेत्र में भिन्न-भिन्न होगी और एक क्षेत्र में भी कारणों के अनुसार पृथक्-पृथक् होगी, फिर भी सामान्य रूप से निम्नांकित सिद्धांतों का ध्यान रखना आवश्यक है—

1. उपचारात्मक शिक्षण में कक्षा का ध्यान रखकर छात्र की क्षमता का ध्यान रखा जाए। जहाँ से उपचारात्मक शिक्षण प्रारम्भ करना हो उसी स्तर से उपचारात्मक शिक्षण कराया जाए।
2. छात्र जैसे-जैसे प्रगति करता रहे, वैसे-वैसे प्रगति चार्ट या ग्राफ के द्वारा उसको निरन्तर सूचित करते रहना चाहिए। इससे छात्र स्वयं अपनी स्थिति को समझेगा तथा उसमें आत्मविश्वास पैदा होगा।
3. छात्र शैक्षिक उपलब्धि नहीं कर सका इसके मूल कारण का सर्वप्रथम पता लगाना आवश्यक है तथा फिर निदान के बाद उपचार करना चाहिए।
4. यदि बालक शारीरिक दोष के कारण घर की किसी अन्य परिस्थितिवश कमजोर हो तो शिक्षक को चाहिए कि वह उसके संरक्षकों से सम्पर्क स्थापित कर चिकित्सा करवाए और उनको समझाए।
5. यदि अभ्यास-माला, विशेष कार्य देने पर भी छात्र प्रगति नहीं कर रहा हो तो परिवर्तन कर अन्य प्रकार का अभ्यास कार्य देना चाहिए।
6. नैदानिक परीक्षण द्वारा न्यूनताओं के प्रकार तथा उसके कारणों के आधार पर ही अभ्यास-माला करनी चाहिए।

उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ

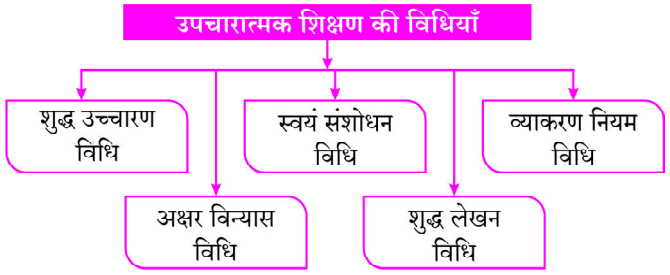

1. शुद्ध उच्चारण विधि

- यदि छात्रों को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाए तो उन्हें अपनी अशुद्धि का स्वयं ही ज्ञान हो जाएगा।

2. स्वयं संशोधन विधि

- यदि छात्र शब्दकोश वर्तनी पढ़े तो वह अपनी अशुद्धियों का स्वयं ही संशोधन कर सकता है।

3. व्याकरण नियम विधि

- छात्र को **वचन, क्रिया, प्रत्यय, उपसर्ग, संयुक्त वर्ण** तथा **कारक** आदि का ज्ञान कराकर शुद्ध वर्तनी सिखाई जा सकती है।

4. अक्षर विन्यास विधि

- अक्षर विन्यास के अभ्यास के द्वारा शिक्षक छात्रों को शुद्ध वर्तनी का अभ्यास करा सकता है।

5. संशोधन विधि

- यदि अध्यापक छात्रों की अशुद्धियों पर ध्यान दें तथा उनमें संशोधन कराएँ तो छात्रों की वर्तनीगत अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है।

6. शुद्ध उच्चारण विधि

- अध्यापक यदि अपने उच्चारण पर ध्यान दे, सदैव शुद्ध बोले तो छात्रों की अशुद्धियों में स्वयं ही सुधार हो जाएगा।

7. शुद्ध लेखन विधि

- अध्यापक छात्रों को सदैव ही शुद्ध लेखन के लिए प्रोत्साहित करें।

8. निरोधक/अवरोधात्मक विधि

- कक्षा का वातावरण **रुचिकर, प्रभावशाली** व **जीवन्त** होना चाहिए।
- छात्रों की शारीरिक व मानसिक अवस्था को ध्यान में रखकर ही शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
- शिक्षण में उचित व प्रभावी विधियों का प्रयोग करना चाहिए।
- समय-समय पर छात्रों को सही निर्देशन देते रहना चाहिए।
- अधिगम में बाधक तत्त्वों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

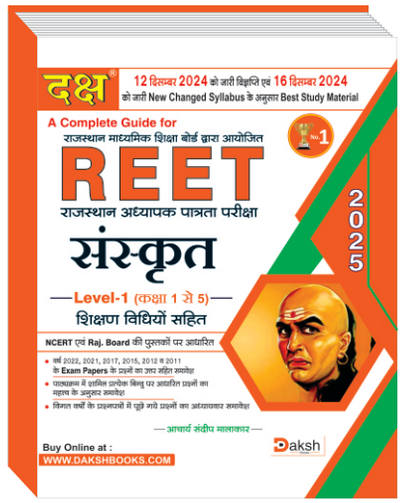

दक्ष प्रकाशन

(A Unit of College Book Centre)

A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)

फोन नं. 0141-2604302

Code No. D-800 | ₹ 400/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु

WWW.DAKSHBOOKS.COM

पर ORDER करें

★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★